ज्ञानामृत

शिवरात्रि अंक

फरवरी, 1982
वर्ष 17 ❋ अंक 8

मूल्य 2.00

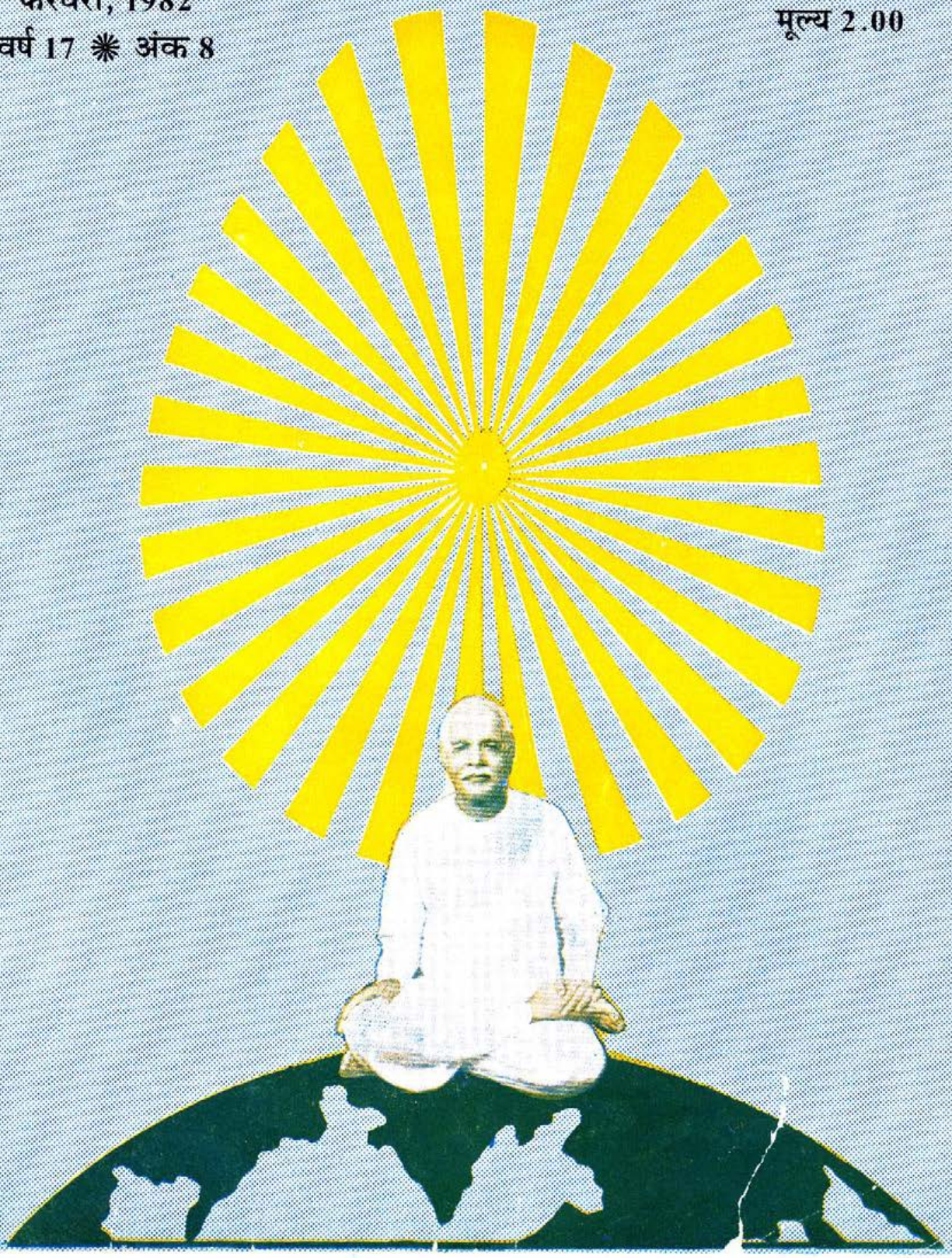

↑ 21 जनवरी को कलकत्ता में राजयोग विश्व शान्ति मेला तथा उत्सव का उद्घाटन भ्राता शम्भू चरण घोष, मुख्य न्यायाधीश कलकत्ता हाईकोर्ट द्वारा सम्पन्न हुआ। ब्र० कु० प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० विश्व विद्यालय द्वारा शिव ध्वज फहराया गया। चित्र में भ्राता शम्भू चरण घोष, दादी प्रकाशमणि जी, ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, संचालिका पूर्वी क्षेत्र तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें "शान्ति कुण्ड" पेविलयन में दिखाई दे रहे हैं

↓ कलकत्ता हाईकोर्ट की न्यायाधीश बहन पदमा खास्तगीर मेला देखने के पश्चात् दीदी मनमोहिनी जी (सहप्रशासिका ब्र० कु० ई० वि० विद्यालय) तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनों के साथ

कलकत्ता राजयोग विश्व शान्ति मेला तथा उत्सव के अवसर पर "ज्यूरिस्ट मीट" में सम्बोधन करती हुई बहन पदमा खास्तगीर, न्यायधीश कलकत्ता उच्च न्यायालय। मंच पर उनके दाएं भ्राता आर० एल० गुप्ता जी, सैशन जज दिल्ली और बाई ओर ब्र० कु० रमेश जी, ब्र० कु० जयप्रकाश जी बैठे हैं

कलकत्ता में राजयोग विश्व शान्ति मेला तथा उत्सव में "लाइट हाऊस हाल" में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई जापान से पधारी कुछ ब्र० कु० बहनें

R. No D (DN) 78

भ्राता नीलम संजीव रेड्डी के नेपाल पधारने पर ब्रह्माकुमारी बहनों ने उनका स्वागत किया। राष्ट्रपति के बायीं ओर नेपाल में भारत के राजदूत भ्राता एन० पी० सिंह जी हैं

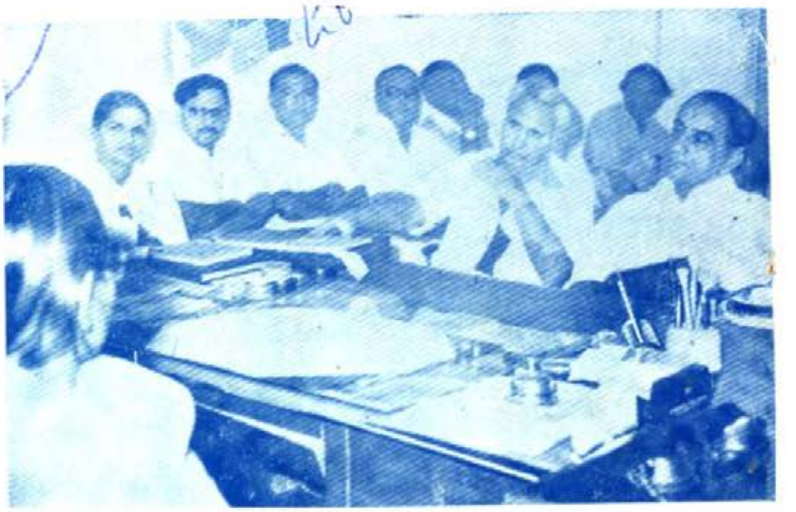

भावनगर जिला में अमरगढ़ में ब्र० कु० गीता, ब्र० कु० अमिता तथा ब्र० कु० रमेश शाह टी० बी० अस्पताल के डॉक्टरों को राजयोग द्वारा स्वास्थ्य और प्रसन्नता विषय पर सम्बोधन कर रहे हैं

भोपाल संग्रहालय में म० प्र० के कृषि मन्त्री भ्राता दिग्विजय सिंह जी को चित्रों की व्याख्या करती हुई ब्र० कु० अवधेश बहन

व्यावरा में लायन्स इन्टरनेशनल सम्मेलन में सम्बोधन करती हुई ब्र० कु० ऊषा बहन

मूल्य रु० 2.00

अमृत-सूची

१. शिव और शिवरात्रि के वास्तविक परिचय से महालाभ(सम्पादकीय) ... २
२. शिव जयन्ति फिर है आई (कविता) ... ५
३. शिवरात्रि—महानतम पर्व ... ६
४. दो बूंद प्रेम के सागर की ... १०
५. सतयुग और संस्कार ... १२
६. जाग, ओ हारे थके इन्सान (कविता) ... १५
७. सुनी हुई बात का प्रभाव और बुराई से बचने की युक्ति ... १७
८. उड़ता पंछी ... १९
९. अमृत वेला या मृत वेला ... २०
१०. शक्तिशाली संकल्प ... २१
११. मन पर चढ़ने वाला रंग ... २३
१२. योगी बनने के लिए मानसिक संग्राम ... २५
१३. शिव जयन्ती (कविता) ... २६
१४. परमात्मा किसे कहना उचित है ... २७
१५. शिव बाबा के अमर सपूतो (कविता) ... २९
१६. मानव का नैतिक पतन क्यों ? ... ३०
१७. गीत ... ३१
१८. मानव जीवन की श्रेष्ठता का आधार—आध्यात्मिकता ... ३२
१९. डूबते का सहारा कौन ? ... ३५
२०. विश्व के भविष्य-वक्ताओं की नजर में भारत ... ३७
२१. ईश्वरीय गीत ... ३९
२२. आत्मा—एक अद्भुत मशीन ... ४०
२३. विदेश सेवा समाचार ... ४३
२४. आध्यात्मिक सेवा समाचार ... ४४

टालमटोल

चिरातीत से मनुष्य दुःखों का कारण और उनका निवारण ढूंढता आया है । लगभग 2500 वर्षों में जितने भी ऋषि मुनि, सन्त-'महात्मा' या मत-स्थापक हुए हैं, सभी ने अपने-अपने विचार इस विषय में व्यक्त किये हैं । यदि उन सभी का संग्रह करके विश्लेषण किया जाय तो निष्कर्ष के रूप में ही काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार—इन पांच को सब दुःखों और पापों का मूल माना गया है । परन्तु हम देखते हैं कि यद्यपि इन दुःखों की अवधि कम की जा सकती है तथा इनमें वृद्धि को रोका जा सकता है, मनुष्य इसके लिए टालमटोल करता रहता है । अपने ही दुःखों से निस्तारा पाने के लिये भी वह समय नहीं निकालता, कुछ नियमों का पालन नहीं करता और कुछ अभ्यास भी नहीं करता । जिसमें वह अपना भला मानता है, उस ओर भी वह प्रवृत्त नहीं होता, उसे भी वह नहीं करता !! यही सूक्ष्म माया है जो मनुष्य की बुद्धि पर पर्दा डाल कर उसे सुलाये रखती है । ऐसे व्यक्ति को प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान सुनने के लिये निमन्त्रण देते हैं तो भी वह अच्छा-सा बहाना बना कर टाल देता है, योग द्वारा आनन्दानुभूति का निमन्त्रण देते हैं तो भी वह आना-कानी करता है, किसी आदत को सुधारने या बुराई को छोड़ने के लिये सुझाव देते हैं तो भी वह भागने की कोशिश करता है । ग़फ़लत, अलबेलापन अवहेलना, आदि सभी इसी टालमटोल ही में शामिल हैं । टालमटोल करने वाले व्यक्ति का मनो-बल कमजोर, निर्णय शक्ति दुर्बल, क्रिया शक्ति क्षीण और मन विकारों के अधीन होता है । वह अपने समय को अपने हाथों नष्ट करता है, विकारों को दुःख का कारण मान लेने पर भी अपना चरित्र अधिक भ्रष्ट करता है !! यों देखने में टालमटोल एक हल्की-सी आदत ही का रूप लिये होती है परन्तु इसमें पांचों विकार, छटी सुस्ती, सातवीं हीन-भावना, आठवां अलबेलापन, नवीं अवहेलना और न जाने अन्य कितनी निर्बलताएं समाई होती हैं । अतः कल्याण के इच्छुक व्यक्ति को चाहिये कि टाल-मटोल को छोड़ दे ।

शिव और शिवरात्रि के वास्तविक परिचय से महालाभ

मनुष्य अपने जीवन में वही कार्य करना चाहता है जिससे उसे लाभ हो। अपनी हानि करने अथवा दीवाला निकालने वाला व्यक्ति बुद्धिमान नहीं माना जाता। जो व्यक्ति 'ज्ञानी' और 'योगी' कहलाता है और जय-पराजय तथा हानि-लाभ में समान रहने का पुरुषार्थ करता है, जान-बूझ कर हानि तो वह भी नहीं करना चाहता। मान-अपमान में समान रहने वाला व्यक्ति भी जान-बूझकर तो स्वयं को अपमानित करने वाला कार्य नहीं करता। इस बात को देखते हुए **मनुष्य को यह सोचना चाहिए कि जो आध्यात्मिक बातें मैं सुनता हूं, वे भी तो कुछ ऐसी बातें हों कि जिनसे जीवन में लाभ हो।** आध्यात्मिकता का उद्देश्य यही तो है कि जीवन में पवित्रता आए और सदाचार बढ़े, मन में शान्ति बनी रहे, बुद्धि की रुचि अच्छाई की ओर हो, चित्त प्रसन्न रहे और आत्मा में आनन्द की वृद्धि हो तथा अन्तरात्मा इस बात की गवाही दे कि जो आध्यात्मिक बातें हम सुन रहे हैं, वे ठीक हैं। यदि किन्हीं तथा-कथित 'आध्यात्मिक' बातों को सुनने से मनुष्य की साधना तीव्र गति लेने की बजाय और ही ढीली होने लगे, उसमें जागृति आने की बजाय आलस्य, अलबेलापन, अवहेलना, अवज्ञा आदि दुर्गुण बसने लगें और मनुष्य का विवेक कुण्ठित, मन मलीन, आत्मा पतितोन्मुख और अन्तरात्मा अभिशप्त अनुभव करने लगे तथा चित्त में ग्लानि महसूस हो तो उसको आध्यात्मिकता' मानना गोया घासलेट का घी मानना है। इस पर भी यदि कोई व्यक्ति, जो चिरकाल से घिसी-पिटी बातों को सुनता चला आ रहा है और इस सब के बावजूद भी वहीं खड़ा है तो उसे 'हठधर्मी' के सिवा और क्या कहेंगे? वह उसे 'धर्म' मान रहा है और हम उसे 'हठधर्मी' कह रहे हैं—बस अन्तर केवल इतना ही है, पर यह अन्तर है ज़मीन और आसमान के बीच के अन्तर-जैसा। अब यदि कोई पुरुषार्थ के मार्ग में आगे बढ़ना चाहता हो, शान्ति और आनन्द की भरपूर प्राप्ति की कामना करता हो और वास्तविकता को जानने की पिपासा लिये हो तो उसे चाहिए कि वह स्वयं परमात्मा शिव द्वारा दिये हुए परिचय को प्राप्त करे, उसका अनुशीलन करे और प्रयोग करे। ऐसे ही प्रभु-प्रेमी, ज्ञान-ग्राही, योगाभिलाषी, गुणांकाक्षी एवं सत्यान्वेषी व्यक्ति के लिए हम यहाँ शिव बाबा अर्थात परमपिता शिव का कुछ स्वकथित परिचय सार रूप में देते हैं जो कि प्रचलित मान्यताओं से भिन्न है परन्तु सही अर्थ में लाभदायक है। इसी परिचय के साथ-साथ हम यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे कि वह अधिक लाभदायक कैसे है।

शिव बाबा का सही परिचय

कुछ लोग 'शिव' और 'शंकर' में अन्तर नहीं समझते। वे कहते हैं कि शिव और शंकर एक ही इष्ट के दो नाम हैं। प्रश्न उठता है कि तब 'शिवलिंग' नामक प्रतिमा और शंकर' की देवाकार मूर्ति—ये दो अलग, भिन्न-भिन्न रूप वाले स्मरण-चिन्ह क्यों हैं? किसी व्यक्ति के पिता को उसके मित्र 'गुप्ताजी' अथवा 'रमेश चन्द्र जी' और उसके माता-पिता 'रम्मू' अथवा 'मेशी' कह कर पुकारते हों, यह तो हो सकता है परन्तु उस व्यक्ति का छायाचित्र (photo) अथवा कलाकार द्वारा बनाई उसकी प्रतिमूर्ति एक ही रूप की होगी न? बनाल रूप की और वृद्ध रूप की दो अलग रूप वाली फ़ोटो भी हो सकती हैं जिनमें काफ़ी अन्तर दिखाई देता हो परन्तु दोनों सशरीर, सकाय अर्थात पिण्ड धारण किये हुए तो होंगी न? परन्तु शिव पिण्डी तो अण्डाकार ही होती है और शंकर की मूर्ति अंग-प्रत्यंग सहित ही सदा स्थापित और पूजित होती है, यहाँ तक कि यदि

उस देवाकार मूर्ति का कोई अंग थोड़ा भी खण्डित हो जाए तो उस अंग-भंग मूर्ति को पूजा के योग्य ही नहीं माना जाता। फिर शिव को गोलाकार प्रतिमा को तो 'ज्योतिर्लिङ्गम' ही माना जाता है जबकि शंकर जी को यह संज्ञा नहीं दी जाती। अन्यश्च, शंकर जी को तो समाधिस्थ ही प्रायः दिखाया जाता है जो इस बात का प्रतीक है कि वे स्वयं किसी ध्येय के ध्यान में मन को समाहित किये हुए हैं जबकि शिव पिण्डी में कोई ऐसा भाव प्रदर्शित न होने से वह स्वयं ही परम-स्मरणीय है। अतः दोनों का अन्तर प्रत्यक्ष ही है। फिर भी इसको एक ओर रख कर कुछ लोग शिवलिंग को पृष्ठ-भूमिका में देकर उस पर शंकर की मुखाकृति अंकित कर देते हैं और अन्य कई चित्रकार शंकर जी से ज्योतिर्लिङ्ग को प्रकट होता हुआ दिखा देते हैं और पुराणों में तो ऐसी भी कथायें अंकित है कि 'शिव' 'शंकर' जी का ही एक शरीर-भाग हैं! सचमुच, यह तो मनुष्यों की अज्ञानता की पराकाष्ठा ही है कि वे एक ओर खण्डित काया वाले देव की पूजा नहीं करते और दूसरी ओर वे किसी एक ही शरीर-भाग की पूजा की बात कहते हैं। स्पष्ट रूप से यह बात विवेक-विरुद्ध है।

'शिव' को परमात्मा का दिव्य नाम मानने से लाभ

फिर, जैसे कि हम कह आये हैं कि अध्यात्मवाद का लक्ष्य तो आत्मा का कल्याण ही है और 'कल्याण' का वाचक तो 'शिव' शब्द ही है। अतः परमात्मा का नाम 'शिव' मानने में ही लाभ है, क्योंकि इससे हमें यह याद रहेगा कि मनुष्यात्मा का कल्याण करने वाला पिता, माता, सखा, स्वामी, एक परमात्मा ही है। दूसरी बात यह है कि आध्यात्मवाद की तो यह पहली ही कड़ी है कि शरीर और आत्मा दो भिन्न सत्तायें हैं और कि आत्मा ज्योतिस्वरूप है जबकि शरीर नाशवान चोला है और हमें **देह से न्यारा होकर आत्मा की स्थिति में स्थित होना है**। जब आध्यात्मिक पुरुषार्थ का पहला पाठ ही यह है तो फिर किसी भी देहधारी को—चाहे वह कोई भी देवता या देवी हो, अपने मन की एकाग्रता के लिए साधन या साध्य मानना गोया अपने ही पहले मन्तव्य के विपरीत है और अपनी ही आधारभूत शाख को स्वयं काटना है। यदि देहधारी शंकर की स्मृति में हम टिकेंगे तो हमारा देह-अभिमान अथवा पर-देहाभिमान तो बना ही रहेगा और हमारी स्थिति तो देहाकार ही रहेगी; अर्थात आत्मिक न होकर दैहिक ही बनी रहेगी। तब यह भला अध्यात्मवाद कैसे हुआ? यह तो देहवाद (अथवा देह-याद) ही हुआ। अतः बातों में भी बात यह है कि लाभ तो विदेहावस्था में है और उसके लिए तो शिवलिङ्गाकार, ज्योतिस्वरूप 'शिव' नामक परमात्मा ही की स्मृति का होना यथार्थ है। निष्कर्ष यह कि यदि तर्क से मनुष्य की हठधर्मी न भी दूर होती हो तो लाभ को देखते हुए तो उसे परमात्मा का नाम शिव, दिव्य रूप ज्योतिर्मय बिंदु मान कर मन का नाता उनसे जोड़ना चाहिए।

शिव के अवतरण का समय कलि का अन्त मानने से लाभ

अब शिव रात्रि त्योहार ही को लीजिए। यदि हम 'रात्रि' शब्द का भाव कृष्ण पक्ष की कोई रात्रि लें तो मास या वर्ष में कुछेक रात्रियों को पूजा कर लेने से अथवा व्रत रख लेने से तो एक सीमित ही लाभ होगा। सोचने की बात यह भी है कि ये दिन और रात तो हम चर्म-चक्षुधारी, इहलोक-वासी, जन्म-मरणाधीन, जागृति, सुषुप्ति आदि अवस्थान्तर के वशीभूत मनुष्यात्माओं ही के लिए हैं—त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, सदा जागती ज्योति, परमात्मा शिव के लिए इस प्रकार के दिन या रात (शुक्ल पक्ष या कृष्ण पक्ष) का क्या भेद? अतः यह समझना कि फाल्गुन मास हमारी काल-गणना अनुसार देशीय वर्ष का अन्तिम मास है और इस कारण यह कल्प के अन्तिम भाग का प्रतीक है और इस मास के कृष्ण पक्ष की चौदहवीं तिथि की अन्धेरी रात के १२ बजे का समय घोर अज्ञानान्धकार और तमोगुण की परा-काष्ठा का प्रतीक है, ऐसा समझने में ही लाभ है। यदि हम ऐसा समझेंगे तो हम केवल एक अन्धेरी

रात को जागने मात्र का पुरुषार्थ नहीं बल्कि इस कलियुगी रूपी अज्ञान अन्धकार के समय को रात्रि मानकर हम इसमें आध्यात्मिक जागृति का प्रयत्न करेंगे। हम केवल इन स्थूल नेत्रों को रात्रि के १०-१२ घण्टे खुला रखने का नाम 'जागरण' न मानकर, ज्ञान-चक्षु अथवा प्रज्ञा नेत्र को खुला रखने को ही जागरण मानकर सतर्क रहने का यत्न करेंगे। निश्चय ही कल्याण रात्रि को जागने में नहीं, ज्ञान द्वारा आलस्य और ग़फ़लत रूपी सुषुप्ति को छोड़ने में ही है। शिव की प्रतिमा के सामने दीपक जगाकर हम शिव को खुश करना चाहें और उस आशुतोष से सुख-शान्ति का अनमोल वर पाना चाहें तो हमारी यह वाणिज्य वृत्ति अथवा यह हमारा व्यापारिक प्रयास सफल होने वाला नहीं है -- यह तो अब तक के अपने अनुभव से हरेक व्यक्ति जान ही गया होगा। हाँ, आत्म-दीप जगाकर, अन्तर्मन को दीप-शिखा बना कर यदि हम शिव के सम्मुख हों और हमारा ज्ञान-चक्षु खुला हो, हमारी आत्मिक स्मृति जागृत हो, तो निश्चय ही हमें प्रभु-मिलन की अनुभूति का अतुल लाभ होगा। इसमें यदि किसी को संदेह हो तो वह संदेह को प्रगट करके सन्तोष प्राप्त कर ले।

'व्रत' और 'उपवास' को सही रूप में मनाने से लाभ

अब व्रत और उपवास की ही बात ले लीजिए। मास अथवा वर्ष में एक रात्रि को भोजन न करना अथवा मौन धारण कर लेना, कुछ-न-कुछ तो लाभ इसमें भी हैं ही परन्तु आहार केवल मुख के भोजन को नहीं कहते। हरेक शरीरेन्द्रिय का अपना-अपना अलग-अलग आहार है। मुखेन्द्रिय यदि भक्षण करती है तो श्रवणेन्द्रिय श्रवण, दर्शनेन्द्रिय (आंख) दर्शन। अपने-अपने विषय को ग्रहण करना इनका आहार ही है। और, अभक्ष का भक्षण न करना व्रत है। प्रतिज्ञा ही का नाम तो व्रत है। जब हम किसी वर्ज्य (forbiden) अथवा निषिद्ध कर्म को न करने की प्रतिज्ञा करते हैं तो गोया हम दूसरे शब्दों में व्रत लेते हैं। ऐसा व्रत एक दिन के लिए ही क्यों? वर्ष के ३६४ अथवा ३६५ दिन तो मन को व्रत तोड़ कर निव्रत होकर रहने की छूट हो और एक दिन वह व्रती बन जाए -- यह तो गोया, "६०० चूहे खाकर बिल्ली हज को चली" वाला किस्सा है। इसी प्रकार आगे-पीछे तो मन विषय-विकारों में वास करे और एक दिन अथवा एक रात्रि को 'उपवास' करे अथवा शिव में निवास करे तो उससे लाभ भी क्षणिक और अल्प एवं न्यून ही होगा। शिव बाबा भोले भण्डारी से एक कण-दाना ही मिलेगा। वास्तविक उपवास तो ज्योतिस्वरूप शिव में मन का स्थाई वास ही है। प्रेम द्वारा मन का शिव के निकट होना ही **उपवास** है।

आक के फूल को ठीक अर्थ में समझने से लाभ

आज हम देखते हैं कि कुछ लोग शिवरात्रि पर अक के फूल चढ़ाते हैं। सोचने की बात है कि इसी फूल को क्यों, अन्य किसी को क्यों नहीं अर्पित किया जाता। और आज, जब कि उप-नगर और नगर महानगर का रूप ले चुके हैं तब आक के फूल विशेष रूप से मनुष्य लाए भी कहाँ से? हरेक भक्त अपने इष्ट पर मन से चीज़ तो कोई बढ़िया ही अर्पित करता है। वैष्णव लोग अपने इष्ट को ५६ या ३६ प्रकार के भोग नित्य न भी लगाएं तो जब-कभी भोग की बात हो तब कोई अच्छा-सा भोग या लड्डू, बूंदी, बर्फी आदि का प्रसाद तो लगाते ही हैं और गुलाब या मोतिया के न सही तो गेंदे के फूल तो चढ़ाते ही हैं। तब शिव पर पानी का लोटा और आक ही के फूल क्यों? आक तो एक जंगली उपज है और प्रायः अपने घर में कोई लाता भी नहीं। न तो यह सजावट की चीज़ है, न तो सुगन्धि देने वाली, न इसका कोई हार बन सकता है, न गुलदस्ता, तब बगीचे के अनेक प्रकार के फूलों को छोड़ कर इन जंगली फूलों को अर्पण करने के पीछे कोई तो रहस्य होगा ही। अवश्य ही, यह मनुष्य की सुगन्धिहीन, सौन्दर्यहीन, नागरिकता एवं सुसभ्यता-रहित किन्हीं जंगली आदतों का सूचक-मात्र है। यह इष्ट देव के प्रति श्रद्धा या परम स्नेह ही का सूचक न होकर उसे सौंप

देने ही के लिए उस पर चढ़ाया जाता है। अतः यह तो उस संस्कार, विचार अथवा मानसिक दुर्बलता का प्रतीक है जिससे मनुष्य छुटकारा पाना चाहता है, जो वास्तव में हेय है। न तो वह प्रसाद की वस्तु है, न उपहार की। वह तो चढ़ाने ही की वस्तु है और उस पर ही छोड़ देने की चीज़ है ताकि वह हमारे पास न रहे।

भांग की बात

हमने यह वार्ता लाभ की बात से शुरू की थी। उस बात को यदि ध्यान में रखें तो इस दिन जो लोग भांग पी लेते हैं, उसमें भला क्या कोई लाभ है? देह-अभिमान रूपी भांग तो मनुष्य ने पहले ही पी रखी है और उस पर भांग का प्याला और चढ़ा लेना, यह तो अपने पतन का स्वयं विधान करना है। कोई भी देश अपने देश में पर्यटकों (Tourists) को भाँग, चरस आदि नहीं लाने देता। यह तो प्रसिद्ध ही है कि यह है ही नशीली चीज़। गोया इससे मनुष्य का विवेक सामान्य और सन्तुलित तो रहता ही नहीं। जो वस्तु लौकिक शासनाधिकारियों द्वारा भी वर्जित है, उसे यदि आध्यात्मिक लोग लेने लगें तो फिर अध्यात्मवाद का अर्थ ही क्या रहा? शिव सदा आध्यात्मिक आनन्द में रहते हैं और मौलाई मस्ती में मस्त रहते हैं, तो स्वयं योग द्वारा उस मस्ती या आनन्द को प्राप्त करने की बजाय भाँग द्वारा अपने होश भी गंवा बैठना, इसमें भला क्या लाभ है? "रोज़े छुड़ाने चले थे निमाज़ और पढ़नी पढ़ी"—और व्यसन तो छूटे ही नहीं, भक्ति के नाम से एक व्यसन, एक कष्ट और ले लिया! इससे तो न राम मिला न रहीम ही मिला। हाँ, भाँग ज़रूर मिली। अतः इस बात को भी यदि हम पुराणों और पोथों की चर्चा और परिचर्चा अथवा तर्क और वितर्क द्वारा न भी समझें तो कम-से-कम अपनी भलाई और लाभ को सामने रखते हुए इस बुराई से तो बचने का यत्न करें।

योग द्वारा ही पवित्रता, शान्ति, और आनन्द का लाभ

मनुष्य की वास्तविक उन्नति, उसे कल्याण की क्रियात्मिक प्राप्ति एवं आनन्द की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने ही के द्वारा होती है। अतः हे मनुष्य, थोथी विद्वता की बातों को छोड़ कर, अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचते हुए तू ज्योति बिन्दु शिव से योग लगा।

—जगदीश

शिव जयन्ति फिर है आई

ब्र० कु० मोहन, (अमृतसर)

शिव जयन्ति फिर है आई
हर ज्योति जिसने जगाई
घर-घर को स्वर्ग बनाने
नई आशायें है लाई

सर्व का जो सहारा
अब धरती पर वो पधारा
सोये थे जो उन्होंने
सुबह की झलक है पाई
शिव जयन्ति फिर है आई···

शिव ब्रह्मा तन में आया
हथेली पे स्वर्ग वो लाया
स्वर्णिम युग की उसने
आ करके राह दिखाई
शिव जयन्ति फिर है आई···

शिव ने किया जो ईशारा
किया विकारों ने फिर किनारा
पवित्रता की उसने
आ करके राह दिखाई
शिव जयन्ति फिर है आई···

शिवरात्रि--
महानतम पर्व

ल० ब्र० कु० पुष्पा, पाण्डव भवन, नई दिल्ली

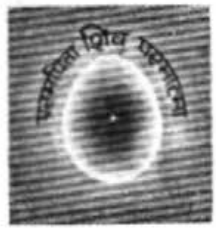

काल-चक्र घूमता जाता है, केवल स्मृति रह जाती है। उसी स्मृति को पुनः ताज़ा करने के लिए यादगारें बनाई जाती हैं; कथाएँ लिखी जाती हैं; जन्म-दिवस मनाए जाते हैं; जिनमें श्रद्धा, प्रेम, स्नेह, सद्भावना का पुट होता है। परन्तु एक वह दिन भी आ जाता है जबकि श्रद्धा और स्नेह का अन्त हो जाता है और रह जाती है केवल परम्परा। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आज पर्व भी उसी परम्परा को निभाने मात्र मनाए जाते हैं। भारत-वर्ष एक अध्यात्मप्रधान देश है और जितने पर्व भारत में मनाए जाते हैं शायद ही उतने पर्व अन्य किसी देश में मनाए जाते हों। समय प्रति समय ये त्योहार उन्हीं छिपी हुई आध्यात्मिकता की रश्मियों को जागृत करते हैं। शिवरात्रि भी उन विशिष्ट त्योहारों में मुख्य स्थान रखता है।

शिव कौन है? उसने क्या किया और कब किया? यदि यह जानते होते तो यह शिवरात्रि का उत्सव केवल पूजा-पाठ का विषय नहीं रह जाता तथा दिनोदिन बढ़ती हुई उच्छृंखलता, अराजकता, अनुशासनहीनता, कलह-कलेष, वर्ग-संघर्ष, दुख, अशान्ति तथा बढ़ती हुई समस्याओं का समाधान कर चुका होता।

महाशिवरात्रि का नाम जैसा महान् है वैसे ही यह महानतम पर्व हम समस्त संसार की आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव की स्मृति दिलाता है। भारतवर्ष में भगवान शिव के लाखों मन्दिर पाये जाते हैं और शायद ही ऐसा कोई मन्दिर हो जहाँ शिवलिङ्ग की प्रतिमा नहीं हो। शायद ही ऐसा कोई धर्म ग्रन्थ हो जिसमें शिव का गायन न हो, परन्तु फिर भी शिव के परिचय से किंचित सर्व मनुष्यात्माएँ अपरिचित हैं। भारत के कोने-कोने में निराकार परमपिता परमात्मा ज्योतिबिन्दु शिव की आराधना भिन्न-भिन्न नामों से की जाती है। उदाहणार्थ— अमरनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, बबूलनाथ, पशुपति-नाथ भगवान शिव के ही तो मन्दिर हैं। वास्तव में कृष्ण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के इष्ट परमात्मा शिव ही हैं। गोपेश्वर एवं रामेश्वरम् जैसे विशाल मन्दिर आज दिन तक इसके साक्षी स्वरूप विद्यमान हैं। भारत से बाहर विश्व पिता शिव का मक्का में 'संग-ए-असवद', मिश्र में ओसिरिस' की आराधना, बेबोलीन में 'शिअन' नाम से पूजा व

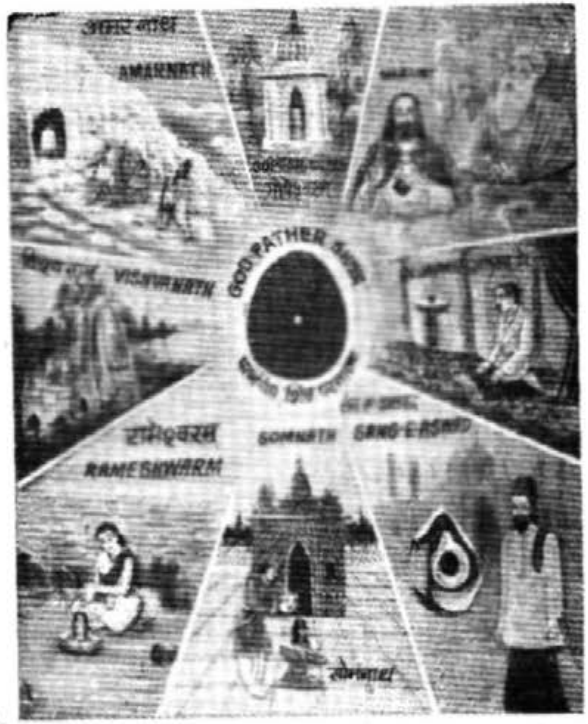

सर्वात्माओं के पिता

सम्मान इसी बात का द्योतक है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा शिव ने अवश्य कोई महान् कर्त्तव्य अथवा कार्य किया होगा।

शिवरात्री क्यों मनाते हैं ?

शिव जयन्ती निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अलौकिक जन्म का स्मरण दिवस है। हम इस संसार में जिस किसी का भी जन्मोत्सव मनाते हैं उसे जन्मदिवस कहते हैं। यदि रात्रि के बारह बजे भी कोई जन्म होता है तो भी उसके जन्मोत्सव को जन्म-रात्रि के रूप में नहीं वरन् जन्म-दिवस के रूप में मनाते हैं। तो प्रश्न उठता है कि शिव के जन्म-दिवस को शिवरात्री क्यों कहते हैं ?

'रात्रि' शब्द इस अंधकार का वाचक नहीं जो पृथ्वी के सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने से चौबीस घण्टे में एक बार आता है। वरन् आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यदि इसका विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट है कि फाल्गुन वर्ष का अन्तिम मास होता है। कृष्ण चतुर्दशी वर्ष की प्रायः अन्तिम अंधेरी रात होने के कारण वस्तुतः कल्प के अन्त के समय व्याप्त घोर अज्ञान अंधकार और तमोप्रधानता के प्रतीक हैं। जब सृष्टि पर अज्ञान अंधकार छाया होता है, काम, क्रोध आदि विकारों के वशीभूत मानव दुखी और अशान्त हो जाते हैं; धर्म, अधर्म का रूप ले लेता है, भ्रष्टाचार का बोल-बाला होता है तब ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव अज्ञान अंधेर विनाश के लिए प्रकट होता है और ज्ञान रूपी ऊषा की लालिमा अज्ञान रूपी कालिमा पर छा कर रात को दिन में परिवर्तित कर देती है। विकारी, अपवित्र दुनिया को निर्विकारी पावन दुनिया बनाना, वैश्यालय को सच्चा-सच्चा शिवालय बनाना, कलियुग दुखधाम के बदले सतयुग सुखधाम की स्थापना करना केवल सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा शिव का ही कार्य है। अब कल्प के वर्तमान संगम युग में अवतरित होकर फिर से वही कर्त्तव्य परमपिता परमात्मा शिव कर रहे हैं।

चूँकि वह है अजन्मा अर्थात अन्य आत्माओं के सदृश्य माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं और उन्हें पुनः दैवी राज्य की स्थापना का कर्त्तव्य भी करना है, वे इस कर्त्तव्य की पूर्ति हेतु परकाया प्रवेश करते हैं अर्थात 'स्वयं भू'परमात्मा शिव प्रकृति को वश में करके साधारण वृद्ध तन में प्रविष्ट होते हैं और फिर उस तन का नाम रखते हैं 'प्रजापिता ब्रह्मा'। प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा वे ज्ञान यज्ञ रचते हैं जिसमें सारी आसुरी सृष्टि की आहुति पड़ जाती है।

शिवलिंग के अतिरिक्त जटाधारी तपस्वीमूर्त, गले में सर्प धारण किये एक देव प्रतिमा भी देखने

शंकर सूक्ष्मकारी देवता

में आती है जिन्हें शंकर नाम से जाना जाता है। यह जानना नितान्त आवश्यक होगा कि शिव और शंकर में कर्त्तव्यों के आधार पर महान् अन्तर है। परमपिता परमात्मा जिन्हें निराकार व ज्योति-बिन्दु कहा जाता है का प्रतीक शिवलिंग है जबकि शंकर प्रकाशमय आकारी देवता हैं। शिव योगेश्वर है—शंकर योगीमूर्ति हैं। शिव रचयिता हैं—शंकर रचना हैं। शिव पिता हैं—शंकर उनके पुत्र हैं। हम शिवरात्रि मना रहे हैं न कि शंकर-रात्रि। त्रुटि केवल दोनों के नाम जोड़ देने से हुई है।

शिवरात्रि से सम्बन्धित कुछ रस्म-रिवाजों का रहस्य

चूंकि परमपिता परमात्मा शिव बिन्दु रूप हैं इसलिए भक्तजन विशाल शिवलिंग बनाते हैं, उस पर पानी मिश्रित दूध (लस्सी), बेल-पत्ते, फूल और वह भी आक को चढ़ाते हैं। शरीर को स्वच्छता के लिए दिन में कई स्नान करतें हैं और साथ ही प्राय: जागरण करते तथा व्रत भी रखते हैं। यह कैसी नियति है कि समयान्तर से धारणा योग्य बातों ने कर्म-काण्ड का रूप धारण कर लिया है। लस्सी चढ़ाने की क्रिया वह भी धीरे-धीरे आत्मा का ध्यान परमात्मा की ओर आकर्षित एवं एकाग्र करने के समान है। बेल का चढ़ाना आत्मा अथवा शालिग्राम का प्रतीक है जिसका अर्थ है कि हम आत्माएँ परमात्मा पर बलि चढ़ें अर्थात उन्हीं द्वारा बताए गये मार्ग का अनुकरण करें। आक के फूल एवं धतूरा चढ़ाने का रहस्य यह है कि अपने विकारों को उन्हें दे कर निर्विकारों बन पवित्रता के व्रत का पालन करें। शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ आत्मिक स्वच्छता धारण करें। भाँग आदि नशीली वस्तुओं का उपयोग तो इस पुनीत पर्व को कलुषित करता है। वास्तव में यह हमें बताता है कि त्रिमूर्ति शिव से सतयुगी दुनिया में हमें जो नारायण समान देवपद प्राप्त होता है उसी नारायणी नशे में रहें ताकि सच्ची सच्ची मन की शान्ति तथा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हो सके। शिव की बारात का भी विशेष महत्त्व है। परमपिता परमात्मा शिव संसार की समस्त आत्माओं को पवित्र बना कर उनके पथ-प्रदर्शक बन कर परमधाम वापिस ले जाते हैं, इसलिये उन्हें आशुतोष व भोलानाथ भी कहते हैं। क्योंकि वह शीघ्र ही वरदान देने वाले व प्रसन्न होने वाले हैं परन्तु हम देखते हैं। कि न तो दिन-प्रतिदिन जीवन वरदानों से भरपूर बन रहा है और न ही काल कंटक दूर हो रहे हैं। जिस व्रत से परमपिता परमात्मा प्रसन्न होते हैं वह है ब्रह्मचर्य व्रत। यही सच्चा उपवास है क्योंकि इसके पालन से मनुष्यात्मा को परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक रात जागरण करने से अविनाशी प्राप्ति नहीं होती। परन्तु अब तो कलियुग रूपी महारात्रि चल रही है उसमें आत्मा को ज्ञान द्वारा जागृत करना ही जागरण है। इस जागरण द्वारा ही मुक्ति, जीवन-मुक्ति मिलती है।

शिव सर्वात्माओं के परमपिता हैं

हमारा यह विश्वास है कि यदि सभी को शिवरात्री का, परमपिता परमात्मा शिव का परिचय दिया जाये तो सभी सम्प्रदायों को एक सूत्र में बाँधा जा सकता है क्योंकि परमपिता परमात्मा शिव का स्मृति चिन्ह शिवलिंग के रूप में सर्वत्र सर्व धर्मावलम्बियों द्वारा मान्य है। यद्यपि मुसलमान मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं तथापि मक्का में 'संग-ए-असवद' नामक पत्थर को आदर से चूमते हैं क्योंकि उनका यह दृढ़ विश्वास है कि यह पत्थर भगवान का भेजा हुआ है। अत: यदि उन्हें यह मालूम पड़ जाये कि भारतवासी खुदा अथवा भगवान को शिव मानते हैं तो दोनों धर्मों में भावनात्मक एकता हो सकती है।

इसी प्रकार ओल्ड टैस्टामैन्ट (सुसमाचार) में मूसा ने जेहोवा का वर्णन किया है वह ज्योति-बिन्दु परमात्मा का ही है। इस प्रकार राष्ट्रों के बीच मैत्री भावना बन सकेगी तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर एकता बनेगी।

भारतवासियों को केवल यह मालूम होता कि

शिवलिंग स्वयं परमपिता परमात्मा की प्रतिमा है तो इस देश में वैष्णवों तथा शैवी में जो झगड़े चले आये हैं तथा परमात्मा के स्वरूप के बारे में जो भिन्न-२ विचार चले आये हैं वे न होते और सभी लोग ईश्वरीय मुख होते और कल्याण के भागी होते। रामेश्वर राम के भी ईश्वर से शिव, इसी प्रकार वृंदावन में गोपेश्वर कृष्ण के इष्ट तथा ऐलीफैण्टा में त्रिमूर्ति शिव के चित्र से स्पष्ट है कि सब धर्मों को एक सूत्र में बाँधने वाला परमपिता परमात्मा शिव ही है। शिव रात्रि का त्यौहार सभी धर्मों का त्यौहार है तथा सभी धर्म वालों के लिए भारतवर्ष तीर्थ है। यदि इस प्रकार का परिचय दिया जाता तो विश्व का इतिहास ही कुछ और होता तथा साम्प्रदायिक दंगे, धार्मिक मतभेद, रंगभेद जाति-भेद नहीं होते। चहूँ ओर भ्रातृत्व की भावना होती।

आज पुनः वही घड़ी है, वही दशा है, वही रात्रि है। जब मानव समाज पतन की चरम सीमा तक पहुँच चुका है। ऐसे समय में कल्प की महानतम घटना तथा दिव्य सन्देश सुनाते हुए अति हर्ष हो रहा है कि कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि इस समय संगम-युग पर ज्ञान सागर, प्रेम, करुणा के सागर, पतित पावन, स्वयं-भू परमात्मा शिव हम जीवात्माओं की बुझी ज्योति जगाने हेतु अवतरित हो चुके हैं और साकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम द्वारा सहज ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा देकर विकारों के बन्धन से छुड़ा कर निर्विकारी पावन देव पद की प्राप्ति करा कर दैवी स्वराज्य की पुनः स्थापना करा रहे हैं। □

रायचूर में "राजयोग द्वारा विधि और शान्ति" सम्मेलन में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० पुष्पा, ब्र० कु० रमेश जी, वी० बी० होडली, जिला सैशन जज, भ्राता बी० वीरैय्या तथा ब्र० कु० ऊषा, सुनन्दा जी बैठे हैं

चिखली विश्व हिन्दू सम्मेलन में नारी सम्मेलन में सुधा बहन प्रवचन कर रही हैं। साथ विश्व हिन्दू परिषद की कार्यकर्त्ता और अध्यक्ष बहन भी बैठी हैं

"दो बूंद प्रेम के सागर की"

ब्र० कु० चन्द्रहास, मधुबन, आबू

अमृतवेला—चारों ओर सन्नाटा, धीमे सुर में कानों में आवाज़ आ रही है—"जीवन को बलिहार शिव पर कर दिया" और नयनों के सामने एक मनोहर मूर्त घूम रही है उस परमप्रिय व्यक्ति की—जिनके साथ इस आत्मा को बहुत कुछ जीवन की घड़ियाँ साथ बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उस मीठी मां की जिन्होंने मुझे अति प्यार के झूले में झुलाते ज्ञान योग से लालन-पालन करते बड़ा किया। तब दिल गाती है "इतना प्यार करेगा कौन मां करती है जितना!"

एक दिन की बात है प्यारे बाबा हाथ पकड़कर रेख-देख पर चल रहे थे। रास्ते में बगीचे में देखा एक छोटा सा चिड़िया का बच्चा पंख हिलाता उड़ने की कोशिश कर रहा था और नज़दीक में उनकी मां अपनी चूँ-चूं की भाषा में उड़ने के लिए उत्साह दिला रही थी। कब वह थक कर बैठ जाता तो माँ उनको चोंच से ठूंगा मार उड़ने को विवश करती। यह दृश्य दो मिनट रुक कर बाबा देख रहे थे और मुस्कराकर बोले "देखते हो बच्चे जब तक छोटा चूज़ा (बच्चा) था तब तक तो मां ने उनको अपनी चोंच में भोजन लाकर उसके मुख में डाल उनकी पालना की, अब बड़ा हुआ है तो उनको उड़ना सिखा रही है। बाबा ने भी तुम बच्चों की, जब तक छोटे थे तब तक अपनी छत्रछाया के नीचे बिठाकर ज्ञान योग से पालना की। अब तो बच्चे बड़े हो गए हो अब तो बाप की रिटर्न सर्विस करेंगे ना! अब चारों ओर जाकर शिव बाबा का परिचय दे सारी दुखी अशान्त दुनियां को रूहानी सुख-शान्ति का रास्ता बतायेंगे ना। क्या तुमको तरस नहीं पड़ता कितने बेचारे मनुष्य दुखी अशान्त हो तुम्हारे ही जड़ चित्रों के आगे जाकर तुमको पुकार रहे हैं।" ऐसे दिलसोज़ मधुर बोल सुन दिल तो करती अभी उड़कर बाप-दादा की आशा पूर्ण करें। लेकिन दूसरे तरफ ऐसे मीठे प्यारे माता-पिता के साथ और दिन-रात अविनाशी ज्ञान वर्षा को छोड़ कहीं जाने को दिल नहीं करता। भला ऐसा प्यारा, ऐसा मीठा दिव्य जीवन का सुख छोड कैसे जावें? हम मुस्कराकर कहते बाबा आप ही तो चुम्बक की भाँति हमको खेंच बैठे हैं, हम क्या करें? यह थोड़े से संगमयुग के दिन फिर कल्प बाद मिलेंगे। तब बाबा बोले "मेरे को भी उस चिड़िया की तरह तुमको ठूंगा मार उड़ाना पड़ेगा।" और फिर सभी में ऐसी मुरली चलाते जो विवश होकर हम बच्चों को अपने अति प्राण प्यारे बाबा की आशाओं को पूर्ण करने दिल पर पत्थर रख जाना पड़ता। यही हाल था सब बच्चों का।

ऐसे अनेक चरित्र इस सृष्टि ड्रामा के अन्दर इस पहले नम्बर हीरो आत्मा के देखे जिनका वर्णन बैठ करें तो शायद पहाड़ भी पिघल जाए। ऐसे निरन्तर योगी के जब सामने जाओ, किसी भी कार्य अर्थ जाओ, छोटे से छोटा स्थूल कार्य भी पूछने जाओ, उनके भी उत्तर में कुछ ज्ञान रत्नों की गहराई जरूर मिलेगी, जैसे हर पल ज्ञान रत्न ही मुख से झरते। फिर स्थूल कारोबार हो चाहे, सूक्ष्म रूह-रूहान हो, फिर भी इतने निर्माण, नम्रचित जो हम बच्चों से सखा बन खेल भी करते। हर स्थूल कार्य में भी साथी बन जाते। प्यारी आत्माओ, क्या बताऊं वे दृश्य सामने आते तो नैन गंगा जमुना बन जाते।

एक बार हमारे मधुबन के अन्दर बरसात में सारा कच्चा रास्ता टूट गया। खड्डे पड़ गए। बाबा ने डायरेक्शन दिया इनको पत्थर डाल पक्का कराओ। उस समय जो १५-२० भाई मधुबन में थे

उन्होंने मिलकर पत्थर बिछाए । नगरपालिका से रोलर मंगाया और सब भाई मिलकर उस रोड रोलर को हाथ से खींच चलाने लगे। बाबा ने देखा बच्चे कितनी मेहनत कर रहे हैं। रहा न गया। खुद आकर रोलर की रस्सी को पकड़ खींचने लगे। उस समय हमारे ८० वर्ष बूढ़े बाबा जैसे जवान बन गए। हम बच्चे कितना भी आग्रह करें लेकिन बाबा बोले "क्या तुम बाबा को बूढ़ा समझते हो ? मेरे को तो डबल पावर मिली है। शिव बाबा तो इसके साथ है। तो तुमसे भी जास्ती डबल फोर्स से खींचूगा।" और सचमुच वह मनोहर मूर्त सामने देखो कैसे मुस्कराती हुई, हम बच्चों को उत्साह दिलाती ऐसे खींच रही है जैसे खिलौने से श्रीकृष्ण खेल रहे हों और फिर प्यार में आए बच्चों को गले लगाए सबके मुख में मीठी-मीठी टोली डाली । सबकी थकावट कहां उड़ गई, पता नहीं। ऐसे ही जब कोई सेन्टर पार्टी आती तब तक बाबा कोई न कोई ऐसा यज्ञ सेवा का कार्य साथ मिलकर करते-कराते जो उससे यह भी भूल जाता कि हम इतनी पोजीशन वाले बैरिस्टर, जज, डाक्टर हैं। बड़ी खुशी-खुशी से मिट्टी की तगारी भी उठा लेते। प्यारे बाबा साथ-साथ शिव बाबा की स्मृति दिलाते, ज्ञान रत्नों से सजाते रहते। यह था प्रैक्टिकल कर्मयोगी का पार्ट जो बाबा खुद बजाए हम बच्चों को सिखाते।

निर्माण मूर्त प्यारे बाबा के और क्या चरित्र बताव। प्रैक्टिकल हम बच्चों के पूरे रूहानी सेवाधारी बन स्थूल सूक्ष्म लालन-पालन तो हम बच्चों का ऐसे किया जो कोई राजकुमार का भी न हो। बाबा कहते "बच्चे, मैं तो तुम बच्चों के भाग्य को देख हर्षित होता हूं। जैसे चन्द्रहास की कथा में भी आता है कि ऋषिगण चन्द्रहास के भाग्य को देख हर्षित होते थे। तुम तो एक-एक बच्चा मेरा होवनहार महाराजकुमार हो। वे तो सकाम दान से अल्प काल की राजाई पाते हैं लेकिन तुम तो इस पढ़ाई से सारे विश्व के राजकुमार बनते हो। ऐसे कोई कालेज देखा ? जैसे बाप अपने बच्चों का सेवक होता है। खुद फटा कोट पहन रूखा-सूखा खाए बच्चों को पढ़ाता है और फिर जब बच्चे बड़े पोजीशन पर पहुँच जाते तो बाप को कितनी खुशी फखुर होता है वैसे मैं भी तुम बच्चों का सेवक हूँ। तुमसे जास्ती मेरे को खुशी होती है कि मेरा एक-एक बच्चा विश्व महाराजन बनने वाला है। इसलिए इस समय की बेगरी भी प्यारी लगती है।" ऐसा प्यारा बाबा हम बच्चों को लाड प्यार से पालते सिखाते दिन-रात लायक बनाने की सेवा में तत्पर रहते। हम बच्चों के लिए नए मकान बनाते लेकिन खुद पुरानी झोंपड़ी में रहते। कब अपने प्रति कोई किसम की सेवा हम बच्चों से नहीं लेते। बस हम २-४ गिने-चुने बच्चे ही थे जो हुज्जत रख प्यारे बाबुल के कोमल रथ को शृंगारते। हम कहते बाबा यह तन आपका थोड़े ही है। यह तो अब शिव बाबा का रथ है उनको हम कैसे भी सजावें आप हमको मना क्यों करते हो ? आप अशरीरी हो जाओ । बाबा हंसते—"आज बच्चे हमको भी ज्ञान देने लगे हैं और मीठी मुस्कान से अपने तन को सरेन्डर कर देते । कब हम हंसी में कहते बाबा भक्ति मार्ग में तो भक्त लोग शिव की जड़ प्रतिमा पर लोटी चढ़ाते लेकिन हम कितने भाग्यशाली हैं जो चैतन्य शिव बाबा के रथ पर पानी की बाल्टी चढ़ाते हैं। तो बाबा हंस पड़ते और कहते "शिव बाबा को याद कर उस हसीन के घोड़े को सजाना। अगर ब्रह्मा समझ इनकी सेवा की तो पाप बनेगा।"

अहा ! वह हस्ती ज्ञान मूर्त अभी नयनों के सामने उस रूप में घूम रही है और अपने प्यार की प्रैक्टिकल भासना दे रही है। अव्यक्त होते हुए भी अपने स्थापना के कार्य को और भी तीव्रगति से कर और करा रही है। अपना अखुट प्यार वह प्रेम का सागर हम बच्चों पर लुटा रहे हैं। सिर्फ उनका अनुभव करने, ग्रहण करने के लिए हम बच्चों को अव्यक्त बाप से अव्यक्त मिलन मनाने की युक्ति हो तो प्यारे बाबा हमारे अंग संग हैं। बच्चों से जुदा हो कैसे सकते हैं ! अच्छा— □□

सतयुग और संस्कार

—ब्रह्माकुमार रमेश, ग्राम देवी बंबई

शिव बाबा ने हमें ज्ञान दिया है कि आत्मा मन, बुद्धि तथा संस्कारयुक्त है। आत्मा का अपना आध्यात्मिक अस्तित्व है, तो विज्ञान की दृष्टि से भी आत्मा का अस्तित्व हैं। विज्ञान की दृष्टि से अनादि आत्मा के अनादि संस्कारों को सिद्ध किया जा सकता है। शिव बाबा यह भी कहते हैं कि हर एक आत्मा के संस्कार अलग-अलग हैं और इतने तक कि एक के संस्कार दूसरे से मिलते-जुलते नहीं हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि विविधता को स्वीकार करके विविधता रूपी गुणों को उपयोग में लाओ। जैसे आत्मा के संस्कार अलग हैं उसी तरह से प्रकृति के विविध अणु (Units) के भी संस्कार अलग हैं। जैसे आत्मा को स्थूल नेत्रों द्वारा देखा जा नहीं सकता उसी तरह इन स्थूल नेत्रों द्वारा प्रकृति के विविध (Units) अणुओं को भी देख नहीं सकते। प्रकृति के हरएक अणु के रूप, रंग तथा संस्कार अलग हैं। प्रकृति के तत्वों की संस्कार भिन्नता को विज्ञान भी मानता है। अर्थात आज की दुनिया में संस्कार-भिन्नता यह एक वैज्ञानिक सिद्धांत है।

सामान्य रूप से देखा जाय तो शरीर से निकलने वाला पसीना, बाह्य दृष्टि से एक समान है। परन्तु एक कुत्ते को कोई भी घटना-स्थल (Crime spot) पर ले जाकर उनके कोई कपड़े आदि को सुंघा दिया जाय तो वह कुत्ता अपनी तीव्र घ्राणेन्द्रियों के कारण ४-५ घंटे के बाद भी उसी घटना-स्थल से उसी गन्ध को सूंघते-सूंघते आगे बढ़ता है। जो पसीने जैसी वस्तु में सुगन्ध या गन्ध रूपी संस्कार अलग हैं यह तो कुत्ते भी जानते हैं। मानव के मुख में दंतावली (जबड़ा) की रचना भी सबकी अलग-अलग है। चोर ने आधी खाई हुई नासपाती (Apple) को या अन्य कोई चीज के आधार पर, वह व्यक्ति कैसा होगा उसके बारे में उस क्षेत्र के निष्णात व्यक्ति आपको बता सकेंगे। न्यायाधीश भी उन्हें मानते हैं। बचपन की यह कहानी सबको याद होगी कि निरीक्षण के आधार पर एक फकीर ने कहा कि थोड़े समय पहिले यहाँ एक ऊंट गया होगा जिसका एक दाँत टूटा है। कारण यह था कि उस फकीर ने वहाँ पर उस ऊंट द्वारा खाए हुए पत्तों को देखकर अनुमान किया था।

हरएक मनुष्य की अंगुली समान दिखाई देती है परन्तु अंगुली पर स्थित विविध सूक्ष्म रेखाओं की आकृतियाँ (Designs) हरेक की अलग-अलग है। इसलिए चोरी आदि के स्थानों पर सबसे पहिले अंगुलियों की छाप का फोटो लेते हैं। दो व्यक्तियों की अंगुली की रेखाओं की आकृति (Design) एक समान है यह सम्भावना १:४ अरब है अर्थात ४०० कोटि आत्माओं में केवल दो व्यक्तियों की अंगुली की रेखाएं समान हो सकती हैं। ऐसा मानते हैं कि आजकल न्यायालयों में भी, न्यायाधीश को मदद करने के लिए अंगुलियों की रेखाओं के छाप के निष्णात नियुक्त किए जाते हैं, अर्थात अंगुली की रेखाओं को भिन्नता के संस्कार को कानून भी मानता है। तो प्रश्न है कि यह रेखाओं में भेद अर्थात प्रकृति के अन्दर संस्कारों का भेद कैसे आया ?

शरीर के भी ऐसे अन्य अंग बाहर से तो समान दिखाई देते हैं परन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उसमें भी विविधता है। शरीर को लोग जड़ मानते हैं परन्तु जड़ शरीर में विविधता लानेवाला कौन ? इस प्रश्न का उत्तर भी वैज्ञानिक दे नहीं सकते। हरएक आत्मा के संस्कारों की विभिन्नता से ही शरीर के अंगों के अन्दर विभिन्नता निर्माण होती है।

कई बच्चे बचपन से ही डरते हैं तो कई साहसी भी होते हैं। उन्हें कौन-सी चीज़ें प्रिय अथवा अप्रिय हैं, वह भी बचपन से ही स्पष्ट होता है। कई बच्चे बचपन से ही बीमार या विकलांग होते हैं। यह संसार रूपी नाटक एक बहुत ही सुव्यवस्थित नाटक

है जिसमें अकस्मात को कोई स्थान नहीं है, ऐसा तो आजकल वैज्ञानिक भी मानते हैं। यदि सृष्टि रूपी नाटक एक सुव्यवस्थित नाटक है तो उस नाटक के अन्दर विविधता भी नाटक का एक भाग है। नाटक जब रंगभूमि पर हो रहा है तब उसका आदि से अन्त तक सब निश्चित (Fix) होता है, उसी तरह से इस सृष्टि रूपी नाटक के अन्दर भी हरएक आत्मा के संस्कार निश्चित (Fix) होने चाहिएं, नहीं तो वह नाटक, नाटक नहीं कहा जायेगा।

एक ही माता के बच्चों में कोई विकलांग होता है, किसी की बुद्धि तीव्र तो किसी की मन्द बुद्धि होती है। तो प्रश्न उठता है कि तीव्र या मन्द बुद्धि रूपी संस्कार-भेद का क्या कारण है? मां-बाप तो बच्चों को शारिरिक जन्म देने के निमित्त मात्र हैं परन्तु यह संस्कार-भेद उन बच्चों के शरीर के अन्दर स्थान ग्रहण करने वाली आत्मा है। आत्मा को पुरुष या स्त्री का शरीर धारण करना है यह बात पहिले से ही निश्चित (Fix) होती है। क्योंकि आत्मा के गर्भ में प्रवेश होने के पहिले शरीर के अवयवों की पूर्ण रेखाएं बन जाती हैं अर्थात आत्माओं के संस्कार-भेद का प्रभाव आत्मा के गर्भ प्रवेश के पहिले से ही अर्थात प्रारम्भ से ही होता है। जो संस्कारों का भेद कितना शक्तिशाली (Powerful) है कि पांच मास पहिले से ही उसी के योग्य और अनुरूप शरीर बनना शुरू होता है। इस तरह शरीर का स्थूल रूप भी आत्मा के कारण ही है, तमोप्रधान आत्मा को तमो-प्रधान शरीर मिलेगा और सतोप्रधान आत्मा को शरीर रूपी प्रकृति भी सतोप्रधान मिलेगी। बम्बई के टाटा-केंसर-रुग्णालय में एक संग्राहलय है, जहां गर्भावस्था में केंसर हुए अर्थात जन्मते ही केंसर हुए शरीरों का संग्रह किया है। उन बच्चों के मां बाप को न तो केंसर था न ही वह केंसर से मरे। तो प्रश्न है कि ऐसे बच्चे रूपी आत्मा को गर्भ के अन्दर ही केंसर का रोग कैसे सहन करना पड़ा जब कि यह केंसर का संस्कार अनुवंशिक भी नहीं था इससे सिद्ध होता है कि यह केंसर का रोग उस बच्चे की आत्मा के अन्दर जन्म से ही था।

इस तरह शरीर भेद भी आत्माओं के संस्कार-भेद के कारण होता है। इसलिए, कई पूछते हैं कि सत-युग में भी नीग्रो, चीनी आदि विभिन्न रूपधारी और शरीरधारी जीवात्माएं जरूर चाहिए नहीं तो नीग्रों जैसे बाल या चीनी (Chinese) जैसे पीली चमड़ी वाले शरीर कैसे उत्पन्न होंगे। इसी संदर्भ में एक बात ध्यान देने योग्य है कि दक्षिण भारत के एक वर्तमान प्रसिद्ध सन्यासी के बाल भी नीग्रो जैसे हैं और उनकी पिछली सात पीढ़ियों में कोई नीग्रो नहीं था, तब ऐसे नीग्रो जैसे बाल उनके शरीर में कैसे उत्पन्न हुए? बाल यह सिर्फ शारीरिक अंग नहीं परन्तु आत्मा के संस्कार-भेद के कारण भी होते हैं। इसलिए जब ऐसे संस्कार वाले बाल या रंग वाली चमड़ी की आवश्यकता होगी तो जरूर ऐसे संस्कार निमित्त वैसा शरीर उस आत्मा को मिल जाएगा।

विज्ञान, संस्कार-भेद का मूल कारण प्रकृति को मानता है क्योंकि उन्हें प्रकृति का सत्य ज्ञान नहीं है। उनको आत्मा की रचना (Anotomy of soul) का ज्ञान भी नहीं है। जब विज्ञान आत्मा के सच्चे स्वरूप को पहचानेगा तब वह विज्ञान, विज्ञान नहीं परन्तु ज्ञान हो जाएगा। आत्मा के संस्कारों की विविधता को जब विज्ञान मानेगा तब विज्ञान संस्करों के श्रेष्ठ और दिव्य बनेना में मददगार बनेगा। आज तो विज्ञान ने शरीर को एक यंत्र बना दिया है और इसीलिए विज्ञान की बातें भौतिकयाद की पुरस्कर्ता है ऐसा लेगता है। विज्ञान को दिव्यता और श्रेष्ठता की बात समझ में नहीं आती क्योंकि विज्ञान इस प्रकार संस्कार-भेद को नहीं मानता।

विज्ञान जब संस्कार-भेद को मानेगा तब संस्कारों के कारण उत्पन्न हुई सतो, रजो, तमो की भिन्नता को भी मानेगा। शिव पिता परमात्मा संगम युग में आकर के संस्कार में परिवर्तन करते हैं अर्थात तमोप्रधान संस्कार को सतोप्रधान संस्कार बनाते हैं। आत्म के संस्कार सतोप्रधान बनते हैं तो तुरन्त ही

सृष्टि भी सतोप्रधान बन जाती है। विज्ञान को अंध श्रद्धा से मानने वाले लोग संस्कार परिवर्तन का कार्य नहीं कर रहे हैं। अर्थात विज्ञान की यह गलती कईयों को दुखदायी होगी, इसलिए विज्ञान का यह फर्ज है कि संस्कार-भेद को मानकर, संस्कार परिवर्तन का कार्य करें तो सतयुग की स्थापना का कार्य बहुत जल्दी शुरू हो जाएगा।

शिव बाबा ने मानव-जीवन की नब्ज अच्छी रीति से पहचानी है इसलिए जितना जरूरी है उतना पुरुषार्थ हम आत्माओं से वास्तव में कराते हैं जिससे आध्यात्मिक क्षेत्र और विज्ञान के क्षेत्र में रही हुई अंध श्रद्धा दूर हो जाय। शिवबाबा कहते हैं पुराने संस्कारों का अन्तिम संस्कार करो और व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करो तब विश्व-परिवर्तन का कार्य होगा। संस्कार बिगड़ा है इसीलिए मानव, समाज और व्यवहार सभी बिगड़े हैं। यह संस्कार ही परिवर्तन की नींव (Foundation) है इसीलिए वर्तमान समय शिवबाबा ने हम आत्माओं को संस्कारों की पहिचान दी है और योग द्वारा उसमें परिवर्तन कराते हैं।

मनोवैज्ञानिक लोग संस्कारों को मानते हैं परंतु साथ-साथ दूसरी एक अलग मान्यता भी रखते हैं, जैसे कुत्ते की पूंछ को सीधा नहीं कर सकते उसी प्रकार संस्कारों का भी परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिए वो लोग कहते हैं कि कई संस्कार इतने जड़ है कि प्राण और प्रकृति साथ में जायेंगे। शिव बाबा इसका भी गुह्य राज़ बताते हैं कि संस्कारों में भी दो भाग हैं एक आदि संस्कार और दूसरे हैं अनादि संस्कार। आदि संस्कारों में आज परिवर्तन हो गया हैं, उन्हें सतोप्रधान बनाना है अर्थात पहिले वो सतोप्रधान ही थे अब फिर तमोप्रधान हो गए हैं तो उन आदि संस्कारों को धारण करना है। विज्ञान संस्कारों के भूत, भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालों को नहीं जानता। हमें ज्ञान मिला है कि भव्य भूतकाल के आधार पर श्रेष्ठ भविष्य बनाने के लिए वर्तमान काल में संस्कारों में परिवर्तन करना जरूरी है। मातेश्वरी ने एक बार हमें कहा था कि यदि संस्कार सतोप्रधान से तमोप्रधान हो सकते हैं तो क्यों नहीं तमोप्रधान से सतोप्रधान बन सकते? अगर प्रकृति के भी संस्कार बदली हो सकते हैं तो आत्मा तो चैतन्य है, तो क्यों नहीं चैतन्य आत्मा के संस्कार परिवर्तन हो सकते।

दूसरी एक विशेष बात शिवबाबा ने बतलाई है कि प्रकृति के संस्कारों में परिवर्तन करने के लिए कोई पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं है। यदि आत्माओं के संस्कार सतोप्रधान में परिवर्तन हो गए तो प्रकृति के संस्कार अपने आप ही (Automatic) सतोप्रधान हो जायेंगे। आज का विज्ञान प्रकृति के प्रदूषण (Pollution) को दूर करने का प्रयत्न करता है तो शिव बाबा आत्मा के अन्दर आए हुए माया के प्रदूषण को दूर करने के प्रयत्न करते हैं। मानव ने प्रकृति को बिगाड़ा है इसलिए मनुष्य आत्मा के संस्कारों में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इस विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वालों का फर्ज है कि प्रदूषित प्रकृति के संस्कारों को परिवर्तित करने के बजाए प्रदूषित आत्मा के संस्कारों में परिवर्तन करने का प्रयत्न करे क्योंकि सतोप्रधान सतयुगी प्रकृति आप ही आप होगी। परन्तु सतोप्रधान सतयुगी या संस्कारी आत्मायें आप ही आप नहीं होंगी तो यह विशेष पुरुषार्थ करना जरूरी है। आज का मानव बिगड़ा हुआ है उसको पहिले परिवर्तन कर अच्छा बनाना है। वह अच्छा होगा तो प्रकृति और साधन सभी अच्छे हो जायेंगे। संस्कार परिवर्तन की इस नितांत आवश्यकता को यदि आज सब समझ लें तो वैज्ञानिक ढंग से संस्कार परिवर्तन का कार्य शुरू हो जाय और उससे यह भी सिद्ध हो जाएगा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का कार्य भी आध्यात्मिक एवम वैज्ञानिक ढंग से तर्कसंगत (Logical) है। इस रीति से जब विज्ञान और ईश्वरीय ज्ञान दोनों मिलकर यह संस्कार परिवर्तन का कार्य करेंगे तो सतयुग की रचना शीघ्र ही हो जायेगी।

जाग ओ, हारे-थके इन्सान !

ब्र० कु० रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

आ चुके परमात्मा शिव दे रहे नव दृष्टि
काल-जर्जर युग-मनुज है, काल-जर्जर सृष्टि
नव-जगत के नव-सृजन का छिड़ चुका अभियान।
जाग ओ,·····।

यद्यपि छायी है जगत में आज काली रात
यद्यपि है अतिशय प्रदूषित प्रकृति का ही गात
किन्तु परिवर्तन-क्रिया भी हो चुकी गतिमान।
जाग ओ,·····।

शिव-पिता अब दे चुके हैं आत्मिक उन्मेष
शिव-पिता अब बदलते हैं विश्व का परिवेश
शिव पिता अब पुनः करते हैं जगत-कल्याण।
जाग ओ,·····।

पुनः जाग्रत हैं स्वयं में आज 'शिव-संकल्प'
स्वयं स्रष्टा ला रहे हैं सृष्टि में नव कल्प,
स्वयं स्रष्टा कर रहे हैं सृष्टि-नव-निर्माण।
जाग ओ, ·····।

इस जगत की आदि क्या है ? क्या जगत का अंत ?
सृष्टि-संचालन-विधा में क्या बहार-बसन्त ?
आज उद्घटित पुनः है यह सकल सद्ज्ञान।
जाग ओ,·····।

स्वस्तिका के चार भागों का प्रकट शुभ सत्य
चार युग के क्रम-विभाजन में विनिर्मित नित्य
आदि सतयुग, अन्त कलियुग की मिली पहचान।
जाग ओ,·····।

स्वयं सृष्टा ने बताया सकल सृष्टि-वृत्तान्त
आदि सतयुग की पुनः है, कलियुग-अन्त !
यह समय है शुभद संगम का करो जयगान।
जाग ओ,·····।

आत्मा-परमात्मा के फिर जुटे संबंध
मिट रहे हैं पाप अनगिन, दुःख भरे अनुबंध !
शांति के, सुख के पुनः ले लो अमित वरदान।
जाग, ओ·····।

दिव्य गीता-ज्ञान का फैला पुनः आलोक
जो बनायेगा जगत को दिव्यता का लोक

देवता तुमको बनाते हैं पुनः भगवान।
जाग ओ,..... ।

विश्व के प्यारे पिता का यह मधुर संदेश
आदि में यह विश्व ही था देवजन का देश
अरे, तुम ही देवता थे अदिति की सन्तान।
जाग ओ,..... ।

विश्व के प्यारे पिता हैं सद्गुणों के ग्राम
आत्माएं हम सभी सन्तान शालिग्राम
प्रेम से मिलकर पिता का करें हम गुणगान।
जाग ओ,..... ।

विश्व के प्यारे पिता का यही मंगल-मंत्र
अब विकारोंवश मनुज होगा नहीं परतंत्र
स्वच्छता धारण करेगा, जो सुखों की खान।
जाग ओ, हारे-थके इन्सान।

अरेरा कालोनी (भोपाल) में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता रघुनन्दन प्रसाद वर्मा अध्यक्ष, राज-परिवहन मध्यप्रदेश, ब्र० कु० महेन्द्र जी तथा अन्य भाई बहनों के साथ दिखाई दे रहे हैं

ब्यावरा में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रही हैं कांग्रेस (ई) महिला मण्डल की अध्यक्षा बहन शर्मा जी, ब्र०कु० रुकमणी, विद्या भगवानसिंह जी साथ में हैं

अकोला में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन ब्र०कु० कलावती भ्राता व्यास देशपांडे कर रहे

सुनी हुई बात का प्रभाव और बुराई से बचने की युक्ति

ले० ब्र० कु० आत्म प्रकाश, देहली

संसार में मनुष्य जो कुछ भी सुनता है उसका प्रभाव तो उस पर पड़ता ही है क्योंकि मनुष्य चेतन है और चेतनता का एक लक्षण यह है कि उस पर संकल्प, वचन या कर्म के प्रभाव की छाप पड़ती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि जैसे वह भोजन करते समय इस बात का ध्यान करता है कि इसका उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा अथवा कि वह सात्विक है, राजसिक है या तामसिक, उसी प्रकार वह इस बात पर भी ध्यान दे कि जो बातें वह श्रवण करता है, उसका प्रभाव उसके मानसिक स्वास्थ्य पर क्या पड़ेगा। कुछ लोग जो यह समझते हैं कि वे जो बात सुनते हैं, उसका उन पर कोई प्रभाव नहीं होता अथवा कि वे जो बात एक कान से सुनकर उसे दूसरे कान से निकाल देते हैं, वे वास्तव में ग़लती करते हैं क्योंकि हरेक ज्ञानेन्द्रिय की तरह कान का सम्बन्ध भी मनुष्य के मस्तिष्क से है। अतः इसलिए, कान से सुनी हुई बात मस्तिष्क ही में जाती है। और फिर यदि मनुष्य चाहता है तो वह उसे भुलाने का यत्न करता है। यद्यपि देखने में तो दोनों कान एक-दूसरे के आमने-सामने हैं तथा शायद कोई साधारण व्यक्ति सोचता होगा कि ये दोनों शायद एक ही सुरंग के दो द्वार है या किसी आम रास्ते के दो सिरे हैं परन्तु वास्तव में दोनों का सम्बन्ध परस्पर न होकर मस्तिष्क से है और मस्तिष्क तो एक सक्रिय टेप रिकार्डर की भाँति है जिसमें सुनी हुई बात रेकॉर्ड हो जाती है।

अतः प्रश्न उठता है कि इस संसार में रहते हुए हम स्वयं को उन आक्रमणकारियों से कैसे बचा के रखें जो हमारे श्रवण मार्ग से अपनी वाणी के द्वारा हमारे मस्तिष्क तक पहुंच जाते हैं और वहाँ से हम आत्माओं के स्वधर्म को आघात पहुँचाने का यत्न करते हैं। भोजन का परहेज़ करने वाले व्यक्ति के लिए तो अनुकूल भोजन करना और प्रतिकूल भोजन से बचे रहना सहज है क्योंकि भोजन के मामले में लोग ज़ोर या ज़बरदस्ती से हमारे मुख में डालने का यत्न नहीं करते। परन्तु हमारे कान के द्वार तो खुले रहते हैं और राह जाते भी तथा न चाहते हुए भी इसमें कुछ बातें पड़ ही जाती हैं। तब प्रश्न उठता है कि यदि एक कान से सुनी हुई बात दूसरे कान से स्वतः ही निकल नहीं जाती और कि यदि कानों को बन्द करने के लिए अभी कोई दरवाज़ा और ताला भी इजाद नहीं हुआ है तो हम मन को मैला करने वाले ध्वनि प्रहारों से कैसे बच कर रहें ?

कई बार ऐसा होता है कि कुछ लोग हमारे पास आकर हमें कई तरह की बातें सुनाने लगते हैं। इनकी बातें हमारे लिए अनामन्त्रित अतिथियों (Uninvited Guests) की तरह होती हैं। क्योंकि जैसे अनामन्त्रित अतिथि के आ जाने पर मनुष्य को ऐसा लगता है कि उसका समय और उसका धन व्यर्थ में खर्च हो रहे हैं और उसे कुछ खुशी भी नहीं हो रही, ऐसे ही जब कोई 'मित्र' अथवा 'स्वजन' आकर मन का ग़ुबार निकालता है तब मनुष्य शिष्टाचार का ध्यान करते हुए सुनने के लिए स्वयं को मजबूर पाता है। यद्यपि वह उसे अहित कर भी समझता है, इसलिए प्रश्न उठता है कि इससे बचने का उपाय क्या है ?

इसमें हम छूआछूत (Contagious) अथवा संक्रामक (Infectious) रोगों के उदाहरण को सामने रखने से इसके उपाय को ठीक समझ सकते हैं। जब हम यह देखते हैं कि नगर में अमुक रोग फैल रहा है, उससे बचने के लिए हम पहले ही से टीके लगवा लेते हैं। जब लोग कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार, इलाहाबाद या अन्य किसी स्थान पर जाते हैं जहाँ हैज़ा फैलने की संभावना हो, तो वे टीका लगवा कर ही जाते हैं। सरकार की ओर से भी आदेश होता है कि मेले के स्थान पर केवल उन्हीं को प्रवेश मिलेगा जिन्होंने वह टीका लगवाया हुआ होगा। अतः या

तो मनुष्य में स्वाभाविक रूप से ही रोग का सामना करने की शक्ति (Power of resistance) होनी चाहिए और या उसे अपनी सुरक्षा के लिए सम्भावित रोग का टीका पहले ही से लगवा लेना चाहिए और या उसे ऐसे वातावरण अथवा सम्पर्क में आना ही न चाहिए जिस सम्पर्क से रोग का भय हो।

इस उदाहरण को सामने रखते हुए अब प्रश्न यह उठता है कि हमारे लिए वह कौन-सी आध्यात्मिक औषधि है जिसका सेवन हमें पहले ही से कर लेना चाहिए। इस विषय में सबसे पहली बात, जो हमारे लिए औषधि का काम कर सकती है, वह यह है कि हम सदा यह सोचें अथवा याद रखें कि हमारा, वक्ता का तथा अन्य सभी का कल्याण किस बात में है अथवा कैसे हो सकता है? कल्याण की भावना हमारे लिए प्रहार के प्रति एक प्रकार का कवच है। कल्याण को सामने रखने से ही हम सुनाने वाले की बात से अपना ध्यान हटा भी सकते हैं, उसे अनसुना भी कर सकते हैं, सुन लेने पर उसे मिटा भी सकते हैं तथा सुनने के बाद कल्याण का कुछ उपाय भी कर सकते हैं। यदि हम कल्याण की भावना और कामना को सामने नहीं रखते तो हमारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और स्थिति सभी दूषित हो सकते हैं। इस बात को अब हम एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हैं।

मान लीजिए कि कोई व्यक्ति हमारे पास आकर किसी ऐसे व्यक्ति की जी-भर कर निन्दा करने लगता है जिससे हम दोनों परिचित हैं। उस निन्दा में वह भद्दे प्रकार के शब्दों का प्रयोग करने लगता है और उनमें द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, तिरस्कार और साथ-साथ अतिशयोक्ति का समावेश है। फिर, वह बात को भी बड़ा लम्बा-चौड़ा बनाकर विस्तार से कहता चला जाता है। अब यदि हम अपने मन में कल्याण की भावना को धारण किये बिना उसकी बात ध्यान से सुनते चले जाते हैं तो वह बात हमारे मन में भी घाव कर सकती है। उसमें घृणा, द्वेष इत्यादि की लहर पैदा कर सकती है और निन्दित व्यक्ति के प्रति हमारी दृष्टि और वृत्ति को दूषित बना सकती है। अब इसकी बजाय यदि वह यह ध्यान में रखे कि ये व्यक्ति जो पीड़ित होकर दुःखालाप कर रहा है, इसका कल्याण करने में मैं कैसे निमित्त बन सकता हूँ तो उस समय घृणा और द्वेष का दाह अनुभव करने की बजाय उसके मन में ज्ञान का झरना बह उठेगा और उसकी बुद्धि ऐसी युक्तियाँ सोचने लगती है जिससे वह उसके मन को राहत पहुँचा सके और घृणित व्यक्ति के प्रति भी सद्-भावना उत्पन्न हो। वह उसकी घृणा में और ईंधन डालने की बजाय उसको ठंडा करने के लिए उस पर ज्ञान जल डालेगा और उसे कर्मों की गति बताते हुए अन्याय, अत्याचार और दुर्व्यसनों को इस कलि-युगी सृष्टि के लक्षण वर्णित करते हुए एक शिव बाबा ही को सबका सहायक और निःस्वार्थ प्रेमी वर्णित करते हुए और इस दुःख-भरी कलियुगी सृष्टि के निकटवर्ती अन्त की बात कहते हुए एवं सतयुगी सुखमयी सृष्टि का संदेश देते हुए उसे सान्तवना देता है। जैसे कोई डॉक्टर औषधि लेकर स्वयं सुरक्षित रहते हुए रोग का उपचार सोचने में ही लग जाता है, वैसे ही वह करेगा।

ब्र० कु० कमलेश जतनी रेलवे इन्स्टीट्यूट में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधन करते हुए, मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० गोलक, ब्र० कु० सुशीला, बहन पटनायक तथा भ्राता चुग जी

"उड़ता पंछी"

ब्र० कु० रछपाल, मोहाली

एक दिन बाबा ने मुरली चलाई,
उड़ते पंछी की महिमा सुनाई।

बाबा कहे :—

उड़ते पंछी की महिमा अपार,
उड़ता पंछी सदा विघ्नों से पार।

उड़ते पंछी की उड़ती कला,
उड़ता पंछी करे सर्व का भला।

उड़ता पंछी उड़ता ही जाये,
देह के बन्धन में कभी न आये।

उड़ता पंछी सदा दुःख से न्यारा,
उड़ता पंछी सदा सर्व को प्यारा।

उड़ते पंछी का बाप-दादा साथी,
उड़ता पंछी है महारथी।

उड़ता पंछी सदा उड़-उड़ जाये,
सबको बाबा का परिचय सुनाये।

उड़ते पंछी की दृष्टि रुहानी,
उड़ते पंछी का चेहरा नूरानी।

उड़ता पंछी सदा सहयोगी,
उड़ता पंछी सदा सहजयोगी।

उड़ता पंछी सदा आत्माभिमानी,
उड़ते पंछी की उड़ान सुहानी।

उड़ते पंछी की मनसा शुद्ध,
उड़ते पंछी की सर्वणिम बुद्ध।

उड़ते पंछी की मीठी वाचा,
उड़ता पंछी मिटाये ज्ञान पिपासा।

उड़ते पंछी को सदा यही उमंग,
सदा रहूं बापदादा के संग।

उड़ता पंछी सदा संतुष्ट,
उड़ता पंछी सदा योगयुक्त।

उड़ते पंछी को सदा शुभ भावना,
उड़ते पंछी की सदा शुभ कामना।

उड़ते पंछी की सर्विस न्यारी,
उड़ता पंछी सदा सेवाधारी।

उड़ते पंछी की डोर बाप हाथ,
उड़ता पंछी सदा करे रास।

उड़ते पंछी की दिव्य सूरत,
उड़ता पंछी सदा सफलतामूर्त।

उड़ता पंछी न होवे अधीर,
उड़ता पंछी सदा महावीर।

उड़ता पंछी सदा दिलतख्तनशीं,
उड़ता पंछी सदा लवलीन।

उड़ता पंछी मेहनत से परे,
उड़ता पंछी मोहब्बत में उड़े।

उड़ते पंछी की एक से ही प्रीत,
उड़ता पंछी सदा मायाजीत।

उड़ता पंछी सदा तिलकधारी,
उड़ता पंछी सदा शस्त्रधारी।

उड़ता पंछी सदा डाली से न्यारा,
उड़ते पंछी को सदा श्रीमत का सहारा।

उड़ता पंछी सदा ईश्वरीय पैगम्बर,
उड़ता पंछी ही लेगा पहला नम्बर।

"अमृतवेला या मृत वेला"

—ब्र० कु० आत्म प्रकाश मधुबन, आबू

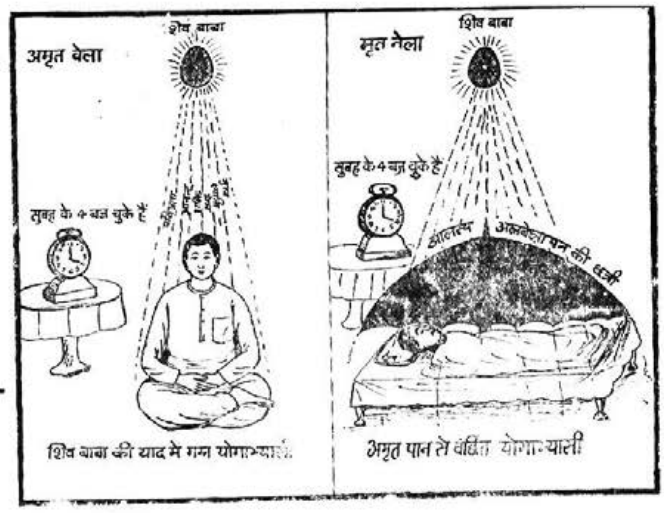

एक योगाभ्यासी के लिए प्रातः का समय अति आनन्ददायक होता है । योग की कुछ अनुपम उपलब्धियों के लिए अमृत वेले का समय अति श्रेष्ठ है । इस समय मन बुद्धि अति स्वच्छ होते हैं और वो सहज ही उड़ान भर सकते हैं । ऐसे तो सारा दिन ही योगाभ्यास किया जा सकता है परन्तु उसके लिए भी सुबह का समय अति सहायक सिद्ध होता है। जो अमृत वेले स्वयं को ज्ञान अमृत से भर पूर कर लेते हैं उनका सारा दिन मानो अमर हो जाता है अर्थात वो माया से अमर हो जाते हैं, माया उन्हें मूर्छित नहीं कर सकती। प्रातः की खुशी उनकी सारे दिन की खुशी का आधार बन जाती है। जो अमृत वेले शिव बाबा से रूह रिहान कर लेते हैं उनकी बुद्धि तीक्ष्ण, दिव्य एवं परख शक्तिशाली हो जाती है । यह ब्रह्म मुहूर्त का ही समय है जब कि हम ब्रह्म-लोक में स्थित हो परमशान्ति की अनुभूति कर सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ब्राह्मण में हर प्रकार की उन्नति का आधार है अमृत वेला ।

इसके विपरीत जो पुरुषार्थी अमृत वेला खोकर इस अमूल्य समय में सोते रहते हैं मानो उनके लिए ये अमृत वेला, मृत वेला के समान है । जब अमृत पान का समय है तब वो नींद पान कर रहे होते हैं। फलस्वरूप माया के प्रकोपों से वो स्वयं को बचा नहीं पाते। उदासी और निराशा उनका सारा श्रृंगार बिगाड़ देती है। उनकी सदा एक ही समस्या बनी रहती है कि "योग का अनुभव नहीं होता", न जाने क्यों खुशी नहीं होती, जीवन में परिवर्तन नहीं आता। हो भी कैसे जब कि अमृत वर्षा के समय उन्होंने अलबेलेपन और आलस्य की छतरी लगा रखी है।

अतः ज्ञान मार्ग के पथिक को चाहिए कि वो अपने हीरे तुल्य जीवन को सुगन्धित बनाने के लिए अमृत वेले ज्ञान पुष्प और योग के पराग से स्वयं का श्रृंगार करे ।

द्वार खड़ा है शिव भगवान,
पांच विकारों का दो दान

शक्तिशाली संकल्प

ब्र० कु० सुषमा, कोलाबा, बम्बई

*भल जाओ सब कुछ...। जो बीत गया उसे भूल जाओ । उसका चिन्तन करके स्वयं को कमज़ोर आत्मा न बनाओ । साहस से आगे कदम बढ़ाओ ।

*तुम पवित्र बलवान आत्मा हो, माया निर्बल है। कल्प-कल्प उस पर तुम्हारी विजय रही है। अब भी तुम्हारी विजय निश्चित है ।

*तुम तो विश्व पर विजय का झंडा लहराने वाले हो । तुम छोटी-छोटी चींटी तुल्य बातों से निराश होंगे तो अपने लक्ष्य में सफल कैसे होंगे ?

*जिसने माया के पाँच महाबलियों को जीत लिया हो, उसके लिए संसार के छोटे-छोटे विघ्नों से लड़ना खेल समान है ।

*तुम्हारे सिर पर सदा ही सर्वशक्तिमान (Almighty) का हाथ है। तुम उसकी रक्षा के अन्दर हो उसकी छत्रछाया में कहीं भी तुम्हारा अहित नहीं हो सकता ।

*जीवन की यात्रा में तो सभी मनुष्य चल रहे हैं परन्तु तुम्हारी यात्रा में कुछ अनोखापन हो। हम किसी का अनुसरण न करें बल्कि हमारा हर कदम विश्व के लिए अनुकरणीय हो ।

*तुम्हारे आगे बाबा चलेंगे, पीछे-पीछे तुम होंगे। तुम्हारी शक्तियों के आगे एक दिन विश्व को ही झुकना पड़ेगा ।

*स्वयं की शक्तियों को पहचानो। तुममें आसीम शक्ति है क्योंकि तुम पवित्र एवं योगी आत्मा हो। तो तुम्हें हार कभी भी नहीं होगी ।

*जीवन में अगर तुम्हारी हार हुई है तो कोई बात नहीं । आगे बढ़ो, आज हार है तो कल जीत अवश्य ही होगी ।

*तुम तो अविनाशी हो। तुम्हें मारने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। तुम्हारा ऊँच भाग्य भी पूर्व निश्चित है, फिर तुम डरते क्यों हो ?

*तुम प्रकृति नहीं बल्कि प्रकृति के मालिक चेतन सत्ता हो । प्रकृति तुम्हारी दासी है । वह अवश्य ही तुम्हारी सेवा करेगी ।

*यदि तुम भगवान में तो निश्चय रखते हो परन्तु स्वयं में विश्वास नहीं रखते तो भी तुम सफलता के उच्च शिखर पर नहीं चढ़ सकोगे। इसलिए स्वयं की महानताओं में निश्चय रखो ।

*शक्ति ही जीवन है। कमज़ोरी मृत्यु के समान है। शक्ति अविनाशी है, कमजोरी विनाशी है।

*तुम्हारी खुशी जग के ग़म मिटाने वाली है, इसलिए किन्हीं कारणों से अपनी खुशी को ग़म में न बदलो ।

*दूसरों की आलोचना की परवाह किये बिना आगे बढ़ो । कोई भी तुम्हारे कदमों को नहीं रोक सकेंगे ।

*दूसरों पर टीकायें केवल वे करते हैं जिनमें कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं होती । इसलिए दूसरों की टीका छोड़ स्वयं को विजय का टीका लगाओ ।

*जीवन की समस्याओं व विघ्नों से धैर्यता के साथ निबटो तो कभी भी मन में उलझन नहीं होगी ।

*अपने मन की संकीर्णता को नष्ट कर दो। तुम महान हो, महान विचारों से आत्मा का श्रृंगार करो ।

*कुछ भी माँगो नहीं। तुम्हारे संकल्पों की शक्ति स्वत: ही तुम्हें सर्व प्राप्तियाँ करायेगी । मांगने से सम्मान नष्ट हो जाता है ।

*जैसे अँधकार सदा ही नहीं रहता वैसे ही कमज़ोरी भी विनाशी है। इसलिए चिल्लाओ नहीं कि हम कमज़ोर हैं ।

*तुम परम पवित्र हो। तुम्हारे एक-एक संकल्प से जग पावन होता है। इसलिए अपने मन में एक भी क्षण अपवित्रता को न आने दो।

*जीवन के हर मोड़ पर जरा स्वयं को ब्रेक लगाकर चलो तो कभी भी दुर्घटना नहीं होगी।

*तुमने जग को ललकारा है तो जग तुम्हें ललकारे तो पीछे मत हटो। सत्य की विजय टल नहीं सकती।

*तुमने जग को विपत्तियों की चुनौती दी है तो जब विपत्तियाँ सामना करें, तो स्वयं में विश्वास न खोओ।

*तुम्हारा मार्ग संसार से भिन्न है—तो मन में साँसारिक कामना रखना मार्ग से विचलित होने का भय है।

*जीवन से भय को सर्वदा के लिए निकाल दो पुण्य आत्माओं को भय किस बात का ? भय मनुष्य को सफल नहीं होने देता।

*तुम जो चाहो कर सकते हो---केवल अपनी चाहना को बलवती बनाओ।

*समस्त विश्व तुम्हारे सम्पूर्ण मूर्त्त को देखने के लिए लालायित है। तुम शीघ्र अति शीघ्र अपना शृंगार करो।

*याद रखो—जीवन के ये क्षण पुनरावृत नहीं होंगे और अन्त में कुछ भी हाथ न लगेगा। इसलिए विनाशी इच्छाओं के पीछे अपने भाग्य-निर्माण के कार्य को समाप्त मत करो।

*तुम अपनी संकल्प शक्ति से उत्तेजित वातावरण को क्षण में शान्त कर सकते हो। इसलिए स्वयं को वातावरण के वश न होने दो। और, अपनी संकल्प शक्ति का प्रयोग करो।

*तुम्हें शिव बाबा ने शक्तियों का वरदान दिया है। तुम शक्ति सम्पन्न हो— अपने इन शक्तियों के हथियारों का प्रयोग करना सीखो।

*तुम्हें सीखना क्या है—बस सभी से स्नेह व सत्कार, अवगुण—ईर्ष्या व द्वेष रूपी कचरे को अपने पावन मन में स्थान मत दो।

*अशुद्ध का चिन्तन करने से भी बुद्धि मलीन हो जाती है। इसलिए ज्ञान धन से स्वयं को सदा स्वच्छ रखो।

*प्रतिद्वन्द्वी अन्त में पश्चाताप की अग्नि में जलता है कि काश मैं दूसरों के जीवन से कुछ सीख लेता। प्रतिहिंसावादी की अन्त में सदा हार ही निश्चित है।

*जहाँ धर्म है, सत्यता है, श्रेष्ठ संकल्प है—वहीं विजय भी है।

*दूसरों के कटु बोल तुम्हें घायल नहीं कर सकते क्योंकि योग का कवच तुमने अपने चहुँ ओर धारण किया हुआ है।

*तुमको अपने एक-एक पवित्र संकल्प से विश्व में पवित्रता की लहरें फैलानी हैं—तुम में पवित्रता की अथाह शक्ति है।

*तुम बाबा की आशाओं के दीपक हो—तुम्हें सभी की निराशाओं को आशाओं में बदलना है।

*तुम सभी विश्व की मुश्किलातों को सहज करने वाले हो—सर्व की समस्याओं को हल करने वाले हो, न कि समस्या पैदा करने वाले हो।

*तुम अनेकों को बंधनमुक्त कराने वाले हो। क्या तुम्हें कोई बन्धन रोक सकता है ?

*बहुतों की तकदीर की रेखा तुम्हें ही खींचनी है। अगर तुम ही अलबेले रहेंगे तो दूसरों का क्या हाल होगा।

त्रिमूर्ति शिव जयन्ति हीरे तुल्य है

—:०:—

मन पर चढ़ने वाला रंग

ब्र० कु० चक्रधारी, शक्तिनगर, दिल्ली

प्यारे बच्चो ! आप ने संसार में अनेक रंग देखे होंगे--नीला, पीला, लाल आदि। परन्तु इनके अतिरिक्त एक रंग ऐसा भी है जो मनुष्य के मन अथवा विचारों पर चढ़ता है। इसे कहा जाता है-संग का रंग। इस विषय में एक कहानी प्रसिद्ध है।

कहते हैं कि रोम देश का एक चित्रकार किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में था जो भोलेपन और नम्रता का रूप हो। कई वर्षों की खोज के बाद आखिर उसे एक ऐसा बालक मिला जिसका मुख-मंडल भोलेपन की तस्वीर पेशकरता था और नम्रता की भी झलक देता था। उस चित्रकार ने बालक को अपने सामने बिठा कर उसका चित्र ले लिया और उसे एक कलैंडर में छपवा दिया। लोगों को वह कलैंडर बहुत ही पसन्द आया। अतः वह बहुत बड़ी संख्या में बिक गया। चित्रकार को काफी आर्थिक लाभ हुआ। इसके बाद चित्रकार कई प्रकार के चित्र बनाता रहा परन्तु वे इतने लोकप्रिय नहीं हुए जितना वह भोलेपन, सरलता और नम्रता को प्रतिबिम्बित करने वाला चित्र।

कुछ वर्ष बीत गये तो चित्रकार को विचार आया कि अब एक चित्र ऐसा बनाया जाय जो भोलेपन और नम्रता वाले चित्र से बिल्कुल विपरीत ही गुणों को मूर्त्त करता हो। अब वह एक ऐसे व्यक्ति की खोज करने लगा जिसका मुख विकराल, उग्र, अपराध-वृत्ति, निर्दयता और चाल-बाजी के आसुरी लक्षणों की तस्वीर सामने लाता हो। इसके लिए वह जेल में कोई ऐसा आदमी देखने को गया। वहाँ पर उसे एक कैदी ऐसा दिखाई दिया जिसे देखते ही मन में भय उत्पन्न होता था और लगता था कि यह व्यक्ति बड़ा निर्दयी, निरंकुश, उद्दंड, बर्बर और अपराध-प्रिय है। चित्रकार बहुत खुश हुआ और स्वयं से बोला-बस, ठीक आदमी मिल गया। उसने तुरन्त ही उस व्यक्ति का चित्र अंकित करना शुरू कर दिया।

यह देखकर अपराधी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा कि यह व्यक्ति उसका चित्र क्यों लिए जा रहा है। यह है तो कोई बहुत अच्छा चित्रकार क्योंकि देखने में ऐसा लगता है कि यह मेरी बिल्कुल ठीक ही तस्वीर खींच रहा है। आखिर उसने पूछ ही लिया--"चित्रकार महोदय, मेरा चित्र किस प्रयोजन से ले रहे हो ? आख़िर इसका क्या करोगे ?"

चित्रकार ऊपर मुँह उठाते हुए बोला—मैं इसका एक कलैण्डर छपवा कर बेचूँगा। तब अपराधी ने यह पूछा कि उसी का ही कलैण्डर वह क्यों छपवा रहा है ? इस पर उस चित्रकार ने उसे सारा किस्सा बताया कि कैसे उसने एक मासूम बालक का चित्र

छपवाया था और वह बहुत लोकप्रिय रहा था। अपराधी ने कहा कि क्या आप वह चित्र मुझे दिखा सकते हैं ?

चित्रकार—क्यों नहीं, यह देखिये। कितना मासूम है ? देखते ही कोई भी बोल उठेगा कि यह बहुत भोला है और उसे दुनिया की बुराई का कुछ पता नहीं, इसे देखकर हर मनुष्य यही सोचेगा कि काश, मैं भी ऐसा होता अथवा कि ऐसे भोले बच्चे प्यारे होते हैं। और अब जो मैं चित्र ले रहा हूँ, इसे देखते ही कोई फौरन कह उठेगा—"हो न हो, यह चित्र किसी अपराधी ही का है।"

चित्र को देखते ही और साथ में उसकी यह व्याख्या सुनते ही, वह कैदी एक नन्हें बच्चे की तरह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।

चित्रकार को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोच में पड़ गया कि यह रोता क्यों है। उसने स्वयं से कहा कि मैंने तो इसे बड़ा क्रूर व्यक्ति समझा था परन्तु यह तो इस छोटी-सी बात पर रोने लगा है। आखिर इसका रहस्य क्या है? मजबूर होकर उसने पूछा भई, रोते क्यों हो ?

फूट-फूट कर रोते हुए कैदी बोला—अरे, यह छोटे भोलेपन का चित्र भी तो मेरे ही बचपन के ज़माने का है। देखो तो बुरी सोहबत में पड़ने से मेरा क्या हाल हुआ है ! चित्रकार ने दोनों चेहरों को मिला कर ध्यान से देखा तो उनके मूल में कुछ समानता भी थी।

तो बच्चो, देखा आपने कि संग से मनुष्य का रंग कैसे बदलता है ? किसी ने तो यहाँ तक भी कहा मुझे यह बताओ कि अमुक व्यक्ति के दोस्त कैसे हैं तो मैं आपको तुरन्त बता दूँगा कि वह स्वयं कैसा है। (Tell me who are his friends and I will tell you what type of man he is) यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि मनुष्य का बुरा या भला होना उसकी सोहबत से पहचाना जाता है।

शिव बाबा ने भी अब हमें ब्रह्मा बाबा द्वारा यह स्पष्ट रूप से समझाया है कि मन अथवा विचारों पर तीन निमित्त कारणों से अच्छाई या बुराई का रंग चढ़ता है। उनमें से एक है—संग, दूसरा है—अन्न, तीसरा है—धन। यदि ये सतोगुणी हों तो इनके संग से मनुष्य स्वयं भी सतोगुणी बनता है और यदि ये रजोगुणी हों तो मनुष्य स्वयं भी रजोगुणी और तमोगुणी बन जाता है।

पुनश्च, अब जब शिव बाबा श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का चित्र दिखाते हुए कहते हैं कि वत्सो, यह चित्र वास्तव में आप ही के आदि स्वरूप का चित्र है तो मनुष्य स्वयं अपने मन में कहता है कि हाय, आज माया के संग से अथवा तमोगुणी एवं अज्ञानी मनुष्यों के कुसंग से मेरी क्या हालत हो गई। आज हम देखते हैं कि घर-घर में श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के चित्र अथवा कलैंडर लगे हुए हैं, यह देख-कर और जानकर अब शिव बाबा से पुनः हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम फिर ऐसे बनें और इस कलियुगी संसार रूपी जेल से मुक्त हों।

□□

ब्र० कु० महादेव जी बीजापुर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जनता को सम्बोधित करते हुए

योगी बनने के लिये मानसिक संग्राम

संस्कार—मैंने तो योगी बनने का विचार करके स्वयं को बन्धन में बाँध लिया है। बाज़ार में बनी हुई मिठाई और भल्ले-पकौड़ी नहीं खानी, सिनेमा नहीं देखना, नावल नहीं पढ़ने, फ़ैशन की बजाय सादगी को अधिक अच्छा मानना है मैंने खाहमखाह इन सब सीमाओं में स्वयं को बन्द कर दिया है। परन्तु अब मैं इस बन्धन में नहीं बंधा रहूँगा। अब तो मैं मनमानी करूँगा और स्वयं को इस कैद से आजाद मानूँगा। अब मैं ज्ञान-ध्यान के चक्कर को छोड़ दूँगा।

शिवकुमार—योगी बनने का व्रत लेकर मैंने बुरा क्या किया है? इससे मेरी शक्तियों का तथा धन का व्यर्थ व्यय न होने के कारण मुझे लाभ ही तो हुआ है। हर बार दोस्तों के साथ सिनेमा जाकर चलचित्र देखने और खाने पीने पर मेरा जो फ़जूल खर्च होता था और जो समय बेकार जाता था, वह बचा ही तो है। फिर मैं वहाँ मारधाड़-अश्लीलता और घटिया मनोरंजन के अतिरिक्त देखता ही क्या था? इसी तरह न जाने हलवाई कैसी सामग्री का प्रयोग करता था, कैसी स्वच्छता रखता था और कैसे उसके संस्कार एवं विचार थे और उस मिठाई में मिला या पड़ा हुआ क्या-क्या होता था--अब उस सब के चक्कर से मैं छूट ही तो गया। चक्कर में तो तभी पड़ा हुआ था क्योंकि तब कभी सिनेमाघर का चक्कर और कभी हलवाई की दुकान का, कभी नावल-विक्रेता का और कभी चाट गोलगप्पे का! इन नाचीज़ चीज़ों ने मुझे अपने बन्धन में बाँध रखा था—ज़बान को मिठाई और भल्ले-पकौड़ी बाँधे हुए थे, तो नेत्रों को सिनेमा आदि। अब ही तो मैं वास्तव में आज़ाद हुआ हूँ। योगी बनने से न मैं मन को मैला करने वाली बातों को देखता, पढ़ता या सुनता हूँ और न पश्चाताप की अग्न में या विकारों तथा वासना की भट्ठी में जलता हूँ। अच्छा हुआ कि मैं छूट गया हूँ। ज्ञान तो 'समझ' तथा 'शिक्षा' ही का नाम है; ज्ञान लेने में बुराई क्या है? ध्यान अथवा योग से तो मुझे अथाह शान्ति मिलती है। अतः मन की शान्ति की मांग तो मानी ही जा रही है, और 'मनमानी' क्या करनी है?

संस्कार—परन्तु संसार में करोड़ों लोग जो ख़ूब मज़े लूट रहे हैं, वे क्या भट्ठी में हैं? वे तो खश देखने में आते हैं। उन्हें तो मौज है। आखिर यह संसार बना किस लिये है? मनुष्य का मन ठीक हो और वह स्वयं को बुराई से बचा कर रखे तो सिनेमा नावल, खान-पान आदि-आदि से कोई अन्तर नहीं पड़ता।

शिवकुमार—विषयों का सुख तो क्षणिक ही है क्योंकि विषय स्वयं ही परिवर्तनशील हैं। यदि उनमें ही सुख होता तो उनका अधिक मात्रा में सेवन करने से अधिक सुख होता। परन्तु हम देखते हैं कि किसी भोग पदार्थ को अधिक मात्रा में सेवन करने से सुख की मात्रा तद्नुसार तो बढ़ती नहीं। इसके

अतिरिक्त, इन्द्रियों को गुलामी में पड़ कर आगे के लिये बेबसी और बेचैनी को मोल लेना कोई समझ का तो काम है ही नहीं। अतः मैं तो कभी आन्तरिक सुख, योग द्वारा मिलने वाले अतीन्द्रिय हर्ष और आत्मिक आनन्द की बलि नहीं चढ़ाऊँगा।

संस्कार—परन्तु, योग मार्ग का अनुगामी होने से लोगों की आलोचना और अनेक प्रकार की बातों को सहन करना पड़ता है और बहुत से विघ्नों को भी पार करना पड़ता है। मुझे तो ऐसे लगता है कि यह झंझट ही है। प्रतिदिन प्रातः क्लास में जाना ही है—यह अपने आराम को हराम करने वाली ही तो बात है।

शिवकुमार—प्रातः उठना तो वैसे भी लोगों ने शुभ लक्षण माना है। प्रतिदिन क्लास में जाने का नित्य नियम भी तो जीवन में नियमितता लाता है। यह कोई कम महत्त्व को बात तो नहीं है। नींद और आलस्य को छोड़कर ज्ञान रूपी अमृत पीने को चेष्टा करना—यह तो बहुत ही उत्तम है। इस में तो श्रेष्ठ लक्ष्य के लिए त्याग की भावना समाई हुई हैं। और जीवन में सद्‌गुणों के विकास के प्रति सतर्कता है। अतः हर हालत में योगी बनना तो गोया पवित्र बनने और सुख-शान्ति रूपी ईश्वरीय विरासत अथवा जन्म-सिद्ध अधिकार का भागी बनना है। उस भाग्य से हटाने वाला यह संस्कार तो माया रूप ही है। अतः, हे माया, अब मैं समझ गया हूँ कि तू कैसे मुझसे योग छुड़ाना चाहती है परन्तु मैंने तो ध्रुवयोगी बनने का पक्का ही प्रण किया हुआ है, तू भाग यहाँ से।

संस्कार—कमज़ोर होकर गिरता है। □

शिव जयंती

ब्र० कु० रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

शिव जयन्ती पर्व फिर से आ गया है !
विश्व में से सुख-शांति जो सपना हुई है
पुनः ब्रह्मा-वंश की रचना हुई है
राज्य माया का मिटाने को जगत से
पुनः उद्यत शक्ति की सेना हुई है
सत्य का ध्वज विश्व में लहरा गया है !
नयी ऊषा नव क्षितिज पर हंस रही है
कालिमा सारी कलुष की नस* रही है
सृष्टि की रचना पुरानी मिट चली है
फिर नयी दुनिया धरा पर बस रही है !
स्वर्ग का संसार मन को भा गया है !
अब विकारों से जगत यह मुक्त होगा
मनुज का मन गुणों में अनुरक्त होगा
ईश की सन्तान तो पुण्यात्मा है
अब नहीं पापात्मा बन 'भक्त' होगा !
ज्ञान का आलोक जग में छा गया है !
शिव जयन्ती पर्व फिर से आ गया है !

*नस = नष्ट होना, नसाना।

'परमात्मा' किसे कहना उचित है ?

ब्र० कु० रेवादास, बिलासपुर

कुछ लोग हमसे प्रश्न करते हैं कि आज भगवानों के अवतरण की होड़ में यह कैसे मानें कि सचमुच भगवान का अवतरण हो चुका है और कि जो ईश्वरीय ज्ञान इस संस्था द्वारा मानव मात्र के कल्याण-अर्थ दिया जा रहा है वह स्वयं परमात्मा ने ही दिया है ? इसके अतिरिक्त कुछ लोगों का यह भी प्रश्न है कि इस संस्था का जन्म तो अभी कुछ वर्ष पूर्व हुआ जबकि बड़े-बड़े धर्मग्रंथ, वेद-शास्त्र आदि अति प्राचीन हैं। तब क्या उनमें ईश्वरीय ज्ञान नहीं ? क्या परमात्मा ने ब्रह्माकुमारी संस्था में ही अपना ज्ञान दिया, अन्य धार्मिक संस्थाओं में नहीं ?

उपरोक्त प्रश्नों की बौछार स्वाभाविक है क्योंकि इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सिखाये जा रहे ज्ञान-योग की शिक्षा देने वाले ज्ञान का स्पष्टीकरण देते समय यह नहीं भूलते कि जो ज्ञान वे दे रहे हैं, वह स्वयं परमात्मा द्वारा उद्घाटित है और इस सत्यता को वे अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि "हम सब तो बच्चे ही हैं केवल परमात्मा ही ज्ञान-सागर है, वही परम शिक्षक है और परम सदगुरु भी। उसने ही यह राज़ हमें बताया है जो आपको दे रहे हैं।" इससे पूर्व कि हम किसी को भगवान मानें यह जानना अनिवार्य है कि भगवान अथवा परमात्मा किसे कहना चाहिए, उसके क्या गुण व विशेषताएं होनी चाहिएं ? क्योंकि आज हर आये दिन कोई न कोई साधु-सन्त, गुरु अथवा आचार्य जब स्वयं को परमात्मा का अवतार घोषित करता है तो साधारण व्यक्ति इस उलझन में पड़ जाता है कि क्या सचमुच यही परमात्मा है ! और कई बार तो ऐसे अवतारों के दर्शन के लिए अन्ध-विश्वास की सीमा को लांघती हुई भीड़ को काबू करना कठिन हो जाता है ! इसके अतिरिक्त कोई राम को, कोई कृष्ण को, तो कोई रहीम को व इब्राहीम को ईश्वर मानता है, कोई प्रकृति के तत्त्व को भगवान माने बैठा है। अतः आज यह फैसला हो ही जाना चाहिए कि आखिर भी 'भगवान' 'ईश्वर' अथवा 'परमात्मा' किसे कहना चाहिए अथवा किस मापदण्ड के आधार पर हम किसी को 'भगवान' की संज्ञा दे सकते हैं ? यहां कुछ लोग प्रश्न कर सकते हैं कि इस झगड़े में पड़ने से क्या एक और झगड़ा उत्पन्न नहीं हो जायेगा ? जो जिसे मानता है उसे मानने दीजिए। आप क्यों किसी के विश्वास को तोड़ते हैं। परन्तु सत्य का परिचय देना तो मनुष्य का नैतिक कर्त्तव्य है। और सच्चाई यह है कि आज संसार में जो हालात उत्पन्न हो गये हैं, उन सभी का एक मात्र कारण ही यह है कि मानव उस परमपिता परमात्मा के सत्य परिचय को भूल चुका है। जिसने मानव के लिए एक विश्व, एक राज्य एक धर्म एक भाषावाली स्वर्गिक दैवी दुनिया की स्थापना की थी और उसे भूलने के फलस्वरूप आज धार्मिक मान्यताएं छिन्न-भिन्न हो गयीं हैं। अनेक धर्मों का जन्म हुआ। शुद्ध राजनैतिक विचार-धारा दूषित होकर नष्ट-भ्रष्ट हो गई। सामाजिक क्षेत्र कई वर्गों में बंट कर रह गया। मानव विकारोंवश परस्पर झगड़ने लगा है। भाई-भाई से पृथक् हो गया। परिवार बट गये। समाज बट गये। विश्व अनेक देशों में बट गया। और अन्ततोगत्वा देश भी बटने लगे हैं। और आज का इन्सान धरती और आकाश के टुकड़े-टुकड़े करने पर भी उतारू हो गया है। जहां एक धर्म, एक राज्य और एक भाषा की एकता थी

वहां आज यह सब क्या हो गया। दिन दिहाड़े खून हो रहे हैं। बलात्कार हो रहे हैं। डाके पड़ रहे हैं। कानून और व्यवस्था किसी कोने में पड़ी-पड़ी सड़ रही है। दया, धर्म, शान्ति, पवित्रता, एकता और चरित्रता रूपी दिव्य गुणों का कहीं नामो-निशान नहीं रहा। अमूल्य मानवीय जीवन असुरक्षित हो गया है।

इतना सब कुछ होने पर भी यदि कोई भोला-भाला इन्सान यह कहे कि हमने उन्नति की है, देश में प्रगति हुई है, हम आगे बढ़ रहे हैं, तो ऐसे भूले-भटके हुए व्यक्ति के लिए ही अब वह मार्गदर्शक स्वयं सन्मार्ग दिखाने आया है। इसलिए उस सर्व-शक्तिमान परमेश्वर को न जानना अथवा उसके बारे में कुछ निर्णय करने की चेष्टा ही न करना तो अत्यन्त आलस्य की निशानी है। इससे तो प्रकट होता है कि प्रभु के प्रति मनुष्य का स्नेह बहुत कम है और यह कमी मनुष्य के लिए बड़ी हानिकारक भी हो सकती है। क्योंकि यदि मनुष्य के अपने जीवन काल में परमात्मा का अवतरण हो परन्तु वह मनुष्य अवतरण के बारे में तटस्थ अथवा उदासीन रहे तो सचमुच वह एक अत्यन्त अनमोल अवसर को तथा एक अत्यन्त महान और सर्वोच्च वस्तु को अपने हाथ से खो बैठेगा और एक अत्यन्त हर्षप्रद स्थिति का लाभ नहीं उठा सकेगा।

अतः, परमात्मा कौन है? इस बात को किसी सर्वमान्य कसौटी पर परख कर जांचना ही होगा। परमात्मा शब्द की संज्ञा किसे देना उचित है, इसके लिए हम विश्व की समस्त आत्माओं, धर्मों एवं शास्त्रों को जो मापदण्ड मान्य है, उसे निर्धारित करते हैं जिसके आधार पर किसी व्यक्ति, सन्त, महात्मा, देवात्मा अथवा प्रकृति आदि के बारे में यह निर्णित होसके कि इनमें से क्या कोई स्वयं को परमात्मा कहलाने योग्य है भी या नहीं।

हमारे विचार से परमात्मा उसे कहना चाहिए:—

(१) जो सर्व को मान्य हो। ऐसा नहीं कि हिन्दू जिसे भगवान माने तो मुसलमान उसका विरोध करे अथवा कोई धर्म जिसे ईश्वर कहे दूसरा उसका खंडन करे। परमात्मा कहलाने का अधिकार केवल उसको ही है जो विश्व की सर्व आत्माओं को मान्य हो।

(२) जो किसी मां के गर्भ से जन्म न लेता हो अर्थात् अजन्मा हो, अभोक्ता हो। क्योंकि यदि वह किसी मां के गर्भ से जन्म ले तो वह मां-बाप जिस कुल, जाति अथवा धर्म के होंगे वह परमात्मा भी इसी चक्कर में उलझ कर रह जायेगा और अन्य धर्म की आत्मायें भी उसे स्वीकार करने में कठिनाई अनुभव करेंगी।

(३) जिसे हम मां के रूप में सम्बोधित करें तो भी जच जाए और यदि बाप के रूप में सम्बोधित करें तो भी जचे क्योंकि परमात्मा तो हम सभी के माता-पिता हैं, बन्धु सखा हैं। अतः किसी भी संबंध से उसे पुकारने पर वह सम्बोधन उसके प्रति किसी भी समय अखरता न हो। अर्थात् दोनों लिंगों के रूप में उसे अंगीकार किया जा सके। उदाहरणतः किसी महात्मा पुरुष को पिता की संज्ञा तो जचेगी, परन्तु माता जी कहते स्वयं ही संकोच होगा।

(४) जो ज्ञान का सागर हो, सर्वशक्तिमान, पतित-पावन, न्यायकारी और सर्व का कल्याणकारी हो, सुख और शान्ति का दाता हो, जो ऐसी शिक्षा दे जिसे हर एक मानव सहज ही अपना सके। जो पांच विकारों पर जीत पहना सके और मनुष्य को दिव्य गुण सम्पन्न बनाकर देवत्व पद प्राप्त करा सके। जो ऐसी शिक्षा दे जिसे अमीर-गरीब अन्धा-कोढ़ी, कमज़ोर, स्त्री-पुरुष सभी अपना सकें।

(५) परमात्मा सर्व आत्माओं से सर्वश्रेष्ठ है उससे ऊपर फिर कोई नहीं। वह किसी की भक्ति, पूजा या आराधना नहीं करता, उसे न तो कुछ अनुभव करने की आवश्यकता है, न पढ़ने की और न ही लिखने की। वह तो जानी-जाननहार है। प्रकृति उसके वश में है। ऐसा जो है, उसे ही परमात्मा कहना अथवा मानना चाहिए।

उपरोक्त वर्णित जिन पांच बातों का उल्लेख

किया गया है, परमात्मा के बारे में शायद ही ये बातें किसी को अमान्य हों। अतः इन बातों को मुख्यतः मापदण्ड मानते हुए हम किसी भी व्यक्ति, महात्मा, देवात्मा अथवा गुरु के बारे में निर्णय कर सकते हैं कि क्या इनमें से कोई परमात्मा है ?

'सर्व जन हिताय' अब स्वयं जो परमात्मा ने अपना परिचय दिया है, हम संक्षिप्त में उसे उसी के शब्दों में यहां उद्धृत करते हैं। ताकि मानव व्यर्थ में ही इधर-उधर भटक कर समय बर्बाद न करे अथवा खोज में ही न लगा रहे अपितु जो खोजा जा चुका है उसका लाभ लेकर इस मनुष्य जीवन को यहां भी सफ़ल बनाए और भविष्य के लिए भी अपना ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करे।

शिव भगवानवाचः—

- ☐ मैं नाम रूप से न्यारा और सर्वव्यापी नहीं हूं।
- ☐ मेरा दिव्य और अलौकिक नाम शिव (कल्याणकारी) है।
- ☐ मेरा रूप ज्योति बिन्दु स्वरूप है।
- ☐ मैं सूर्य, चांद, सीतारागण से भी पार ब्रह्मलोक, सचखंड, परमधाम का निवासी हूं।
- ☐ मैं ही पतित-पावन, ज्ञान, सुख, शान्ति का सागर व दाता हूं।
- ☐ मैं ब्रह्मा, विष्णु और शंकर का भी रचयिता हूं।
- ☐ मेरा मनुष्य सदृश्य जन्म नहीं, मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है।
- ☐ मैं धर्मग्लानि पर कलियुग के अन्त में अवतरित होता हूं।

—:०:—

शिव बाबा के अमर सपूतो

ब्रह्माकुमार विजयसिंह

शिव बाबा के अमर सपूतो, कैसी निद्रा छाई है
जागो सुनो ये अमर कहानी, अमर बनाने आई है……

कुम्भकरण की नींद ना सोओ विषय विकारो में फँसकर
गई बीत रात अब संगम का सबेरा, जल्दी आओ तुम हँसकर
मेघनाद से बोल ना बोलो, शक्ति क्षीण हो आई है……

रावण राज्य नहीं अपना, काहे को दुःख उठाते हो
भूल गए अपने को खुद, ईश्वर को दोष लगाते हो
माया में भरमाते यों, बदली दुःखों की छाई है……

परमधाम से अमर बनाने, अमरनाथ बाबा आए
किस गफलत की नींद पड़े हो, अलसाए क्यों कुम्हलाए
पतितों को पावन करते, क्यों गहरी सोच समाई है……

ज्ञान की ज्योति जलाना सीखो, राजयोग योगी बनकर
कमल समान बने जीवन, करो युद्ध विकारों से तनकर
'विजय' तन मन धन अर्पण करके, मरने की बारी आई है……

—:०:—

मानव का नैतिक पतन क्यों ?

—ब्र० कु० अवतार सिंह, आबु

इस सम्बन्ध में विविध सिद्धान्त प्रचलित हैं। कुछ लोग इस मत का अनुकरण करते हैं कि देश, वर्ग, जात पात अथवा गोरे काले का भेद भाव ही पतन का कारण है, जिससे अनेकानेक हिंसात्मक आन्दोलनों की उत्पत्ति हुई—तथा अन्य विचारक इन्हें द्वापर युग के राजाओं द्वारा जो माया जनित, विकारों से युक्त मनोवृत्तियों से उस विलासिता में मदहोश होने के कारण जो-जो अत्याचार हुए उन्हें ही इस अधोगति का उत्तरदाई ठहराते हैं। एवं अन्य बुद्धिजीवी बार-बार भारत पर विदेशियों के आक्रमण तथा उनके द्वारा की गई लूट-खसूट और राजपूतों के परस्पर विरोध से हुई क्षतियों को भी इसमें शामिल मानते हैं। तथा अन्य विवेकशील प्राणी, शास्त्रकार तथा ग्रन्थकारों को भी इस विषय में दोषी ठहराते हैं। वह लोग प्रायः कहा करते हैं, कि जिन टीकाकारों अथवा ग्रन्थकारों ने निर्दोष-देवताओं को आरोपित करके शास्त्रों में यह दर्शाया कि देवता भी चरित्रहीन ही थे। अतः इस सिद्धान्त ने ही उस पवित्र प्रवृति के सतोप्रधान मनोवृत्तियों से युक्त मानव को हेय दृष्टि से देखना सिखाया।

जिससे मानव में विविध प्रकार की बुराइयों के बीज अंकुरित हुए और अन्दर की विकारी वृत्तियों से मनुष्य को बाहर सड़ान्ध आने लगी। फलित अनेक प्रकार के भेद-भाव की जड़ें गढ़ गई जिसका विकृत रूप नाना प्रकार की समस्याओं में परिणित हुआ। और यही कारण नैतिक पतन का मूल आधार बना, जो कि समाज को अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ। यहां तक कि भाई-भाई भी एक-दूसरे के रूधिर की होलियाँ खेलने तक उतारु होने लगे। अतः प्रेम विकृत रूप धारण करके मानव को स्वार्थान्धता की काली छाया में ग्रसित करने लगा और इस स्थिति में मानव मन में बानर अथवा पशु वृतियों के लिए खुला स्थान प्राप्त हुआ। फलस्वरूप इन्सान ने अपने भौतिक मूल्यों को स्वयं से अलग खूंटी पर टांग दिया और निसंकोच ही चरित्र को बाजारों में बेचना आरम्भ किया। फलित मानव के विकट प्रति-द्वन्द्वी माया नामक दुर्जेय शत्रु के भयंकर आतंक से उसको पराजित होना पड़ा और इस दयनीय दशा में मानव के सिर पर माया ने अपनी दासता की जंजीरे लटका ली।

उपरोक्त को ध्यान में रखने से मनुष्य सहज ही इस निर्णय पर पहुंच जाता है, कि उसके अधोपतन में देह अभिमान ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि दैहिक स्तर को प्राथमिकता मिलने पर ही नीच, निन्दनीय पतन-कारी काम क्रोधादि विकारों की उत्पति होती है। इसीलिए गीता[1] में भी लिखा है विषयासक्त हुए मानव को अनेकानेक कामनायें उत्पन्न होती हैं, और उनमें विघ्न पड़ने से क्रोध। अतः तात्पर्य यह है, कि काम क्रोधादि विकार ही मनुष्य को विवेक शून्य करने वाले तथा अत्यन्त दुःखदाई हैं। इसी लिए तो गीता[2] में फिर दूसरे स्थान पर लिखा है, कि काम से क्रोध और क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव पैदा होता, फलित स्मृति विभ्रमित हो जाती है, जिससे बुद्धि का नाश होता तथा इसी हेतु मानव अपनी श्रेष्ठ स्थिति से नीचे गिर जाता है।

इसका तात्पर्य यह है, कि जब मानव में अनेक प्रकार के दैहिक आकर्षण बढ़ जाते हैं, तो वह

---

१. क्रोधाभ्दवति संमोहः समोहात्स्मृति विभ्रमः २/३६

२. कामात्क्रोधोऽभिजायते। २/६२

माया जनित विषयासक्त हो जाता है। और उन विषय विकारों में आसक्त हुए मनुष्य परमपिता परमात्मा से योग विमुक्त हो जाते हैं। और इस स्थिति में ही मानव का ब्रह्मचर्य बल क्षीण हो जाता है। फलतः बुद्धि का नाश अथवा उसमें सूझ-बूझ ही नहीं रहती अर्थात वह जिस कर्म में प्रवृत है, उसके परिणाम का ध्यान ही नहीं रहता कि मुझे क्या करना अनुचित और क्या करना उचित है। अमुक कर्म मुझे कैसे करना है और क्या कर रहा हूँ। अतः इस प्रकार स्मृति विभ्रमित होने से कर्मों की गुह्यतम गति से अविद्या हो जाती है। अतः इससे स्पष्ट ही विदित होता है, कि यह काम विकार ही मानव को नर्क रूप अधोपतन में धकेलने का कारण है। अब प्रश्न है, कि किस प्रकार इस दुर्जेय शत्रु पर विजय प्राप्त की जाय। इसके लिए एक ही उपाय है और वह यह कि स्वयं पतित पावन परमात्मा द्वारा सिखाया सहज राजयोग जिसमें मानव का उत्थान निहित है, जो कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के किसी भी सेवा केन्द्र पर निःशुल्क सीखा जा सकता है।

गीत

भाग्यविधाता शिव हैं आये, सब का भाग्य बनाने,
संगम की इस शुभ वेला में, अपना भाग्य बनाले,
ओ मेरे मीठे भाग्य सितारो,
आओ अपनी तकदीर संवारो,
ना है कोई उम्र की सीमा,
ना कोई मैंने ताला लगाया,
बालक सो मालिक है बनाया···भाग्य···
आओ मेरे मीठे प्यारो
विधि सरल ये तुम अपनालो,
बाबा को तुम दिल में बसालो,
सर्व खजाने खुद ही पालो,
भाग्यशाली खुद को बनालो·····
बापदादा को साथी बनालो
दोनों चाबी ये तुम लगालो
मैंपन को अब मन से भगालो,
मन को मेरे संग लगालो,
जीवन अपना धन्य बनालो·····
जागो जागो सोनेवालो
अपना भाग्य तुम ना गंवाओ,
उल्टी चाबी तुमना लगाओ,
संपन्न सदा तुम खुद को बनालो,
संपूर्ण तुम खुद को बनालो·····

कैसे भूल जाऊँ, खुशियों भरी वह शाम

— ब्र० कु० भावना, गांधी नगर

कैसे भूल जाऊँ, खुशियों भरी वह शाम,
तूने अपना कर मुझे, पिलाया प्रेम भरा जाम।
त्रेसठ जन्मों की नींद जैसे हराम हो गई,
नव जागरण की नव शमा जल गई।
मुझे तो जैसे खुशियों का खज़ाना मिल गया,
तू क्या मिला, धरती और आसमाँ मिल गया।
तूने आकर मुझको अपना बनाया,
कीच से निकाल जैसे कमल पर बिठाया।
जीवन की नाव को अब किनारा मिल गया,
ज्ञान सूर्य में जैसे सितारा मिल गया।
दर-दर का भिखारी आज बादशाह बन गया,
विश्व नवनिर्माण का बस मुझे मंत्र मिल गया।

—ले० ब्र० कु० हीश, जूनागढ़

"मानव जीवन की श्रेष्ठता का आधार—आध्यात्मिकता"

ब्र० कु० कुसुम, मेहसाना

यह एक लोकप्रिय मान्यता है कि—"मानव जीवन श्रेष्ठ जीवन है" लेकिन मानव जीवन की सार्थकता अथवा श्रेष्ठता उसके श्रेष्ठ कर्म, शुद्ध आचरण, शुद्ध संकल्पों में निहित है। अगर किसी भी मानव में यह गुण नहीं तो अगर हम उसे मानव की जगह दानव की संज्ञा दें तो भी कोई अतिशयोक्ति न होगी। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है उसे अपने कर्मों की गुह्य गति के ज्ञान को जानने की क्षमता (capacity) है जिसके आधार से ही उसे हम जानवर अथवा पशुओं के समाज से भिन्न कर सकते हैं। क्योंकि बच्चे को जन्म देना, उसको पालना-पोशना, खाना-पीना तो जानवर भी करते हैं। अगर हम भी मानव जाति में जन्म लेकर सिर्फ इतना ही करते हैं तो यह भी पशुता से कम नहीं है।

वर्तमान समय में आज मनुष्य का यही हाल है, वह अपने व्यवहारिक जीवन अथवा भौतिकता में इतना आसक्त हो गया है कि वह अपने धर्म, कर्म, नैतिकता आदि सबको भुला बैठा है और वह अपने जीवन को श्रेष्ठ मानव के रूप में न बिता कर दानवता अथवा पशुता के रूप में व्यतीत कर रहा है। कारण कि उसने अपने जीवन में से आध्यात्मिकता के तो नामोनिशान तक को मिटा दिया है। दुनिया के मायावी आर्कषण तथा भौतिक साधनों के क्षण-भंगुर अथवा अल्पकालीन सुख के पीछे दौड़ते हुए आध्यातम ज्ञान को एक तरफ छोड़ दिया है। वह यह भूल चुका है कि उसके जीवन को श्रेष्ठता अथवा सफ़लता, आध्यात्मिकता में ही छुपी है। मनुष्य अगर स्वयं को और स्वयं के पिता को वास्तविक रूप में नहीं जानता अर्थात् आत्मा और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप की पहचान नहीं है तो उसका जीवन जानवर मिसल है।

आज के मानव का लक्ष्य

आधुनिक युग में मनुष्य ने अपने जीवन का लक्ष्य ही रोटी पैसा, धन-दौलत को बना लिया है और वह इसी मंज़िल पर पहुँचने की दिन-रात कोशिश में लगा हुआ है। लोभ के वशीभूत होकर पेट भरने की जगह बैंक बैलेन्स (Bank Balance) को बढ़ाने में लगा हुआ है। मज़दूर वर्ग के मनुष्यों का तो यह हाल है जो दिन-रात मेहनत कर ख़ून-पसीना बहा कर के भी एक समय मुश्किल से पेट भर पाते हैं। लेकिन उच्च वर्ग इसकी चिन्ता न करके अपने लक्ष्य पूर्ति करने के लिए वह उनके पेट को काटने में ज़रा भी संकोच नहीं करता है, आखिर ऐसा क्यों? अगर इस प्रश्न के कारण को यदि देखें तो हम पायेंगे कि आज मनुष्य के अन्दर दिन-प्रतिदिन बुराइयां—काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हैं जिसके कारण ही मानस पटल पर अज्ञान रूपी अंधकार का पर्दा छा गया है। और वह कुकर्म करते हुए ज़रा भी भयभीत नहीं होता है। ऐसे भी सांइस ने मनुष्यों को इतना नास्तिक बना दिया है जिससे कि आध्यात्मिकता में रुचि तो क्या वह उसको जानने की भी कोशिश नहीं करता है। और सांइस द्वारा अन्वेषण किये गये साधनों को ही अपने जीवन के सुख का वास्तविक आधार समझ बैठा है और उसको ही मानवीय जीवन की श्रेष्ठतम् मंजिल समझ उस पथ का राही बन तेज कदमों से उस पर दौड़ता चला जा रहा है। चाहे इस मंजिल को पाने के लिए उसको अगर सैकड़ों पाप कर्म भी करने

पड़ें, तो भी वह उनको सहर्ष स्वीकार कर शीघ्र अति-शीघ्र अपने गन्तव्य पर पहुँचने की कोशिश में लगा हुआ है क्योंकि उसके जीवन का लक्ष्य ही वही है तो "जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण" आने भी स्वाभाविक हैं। ऐसे भी अगर देखा जाए तो मनुष्य की आवश्यकताएं अनन्त हैं उनका कहीं भी अन्त नहीं है। एक आवश्यकता के बाद दूसरी पूरक (Supplementary) आवश्यकता के रूप में हमारे सामने में आती है, जिसकी पूर्ति (Supply) करना उसके लिए और भी जरूरी हो जाता है। इन्हीं बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति में वह अपनी जीवन लीला को भी समाप्त कर देता है। जिस प्रकार कि मकड़ी जाला बनाती है और उसका विस्तार करते-करते उसमें स्वयं ही फंस कर मर जाती है, ठीक ऐसे ही आज के मानव की दशा है। वह भी भौतिक साधनों के अल्प-काल सुख को ही सर्वस्व मानकर उसमें फँस बैठा है।

वर्तमान मानव जीवन दुर्लभ है

प्राय: मनुष्यों को यह कहते हुए सुना जाता है कि मानव जीवन दुर्लभ है अर्थात् वह उसको एक अमानत के रूप में स्वीकार करता है। यह जानते हुए भी कि मनुष्य का जीवन अनमोल है लेकिन फिर भी वह उस अनमोल हीरे जैसे जीवन का उपयोग की जगह दुरुपयोग करने में लगा हुआ है। कारण वह अपने जीवन के मूल्य (value) से अनभिज्ञ है। वह यह भूल गया कि जब आदि में उस में दिव्य गुण थे तो वह स्वयं ही पूजनीय देवता के समान था। आज अज्ञान के कारण मानव जीवन का दिनों दिन ह्रास अथवा पतन होता जा रहा है, इसी कारण ही आज समाज में अनेक घृणित घटनाएं घटती हैं जो कि मानव जाति के नाम पर कलंक है। जबकि एक ओर तो मनुष्य के जीवन को दुर्लभ माना जाता है और यह जानते हुए भी दूसरा ओर मनुष्य ऐसे घृणित कर्मों में फंसा हुआ है। वास्तव में कौन सा जीवन दुर्लभ है उसको अभी इसकी सही पहचान नहीं है। मनुष्य का दुर्लभ जीवन उसका है जिसने वर्तमान समय परमात्मा को पहचाना है। और स्वयं की वास्तविक जानकारी प्राप्त की है कि यह उसका अन्तिम जन्म है और इसी अन्तिम जन्म में वह अपने कर्मों को श्रेष्ठ बना और दिव्य गुणों, पवित्रता को धारण कर अपने जीवन को अमानत समझकर, अनमोल हीरे जैसा बना कर इस जीवन को सही अर्थों में सार्थक करता है।

मानव जीवन में आध्यात्मिकता का महत्त्व

आज मनुष्य अपने जीवन में जितना भौतिकता अथवा सांसारिकता को महत्व देता है उससे कहीं उसके जीवन में ज्यादा महत्त्व आध्यात्मिकता का है क्योंकि जब मनुष्य अंजाने ही अज्ञान के वशीभूत होकर अन्धकारमय पगडंडी पर चल कर राह विहीन हो जाता है अर्थात् वह अपने मार्ग से भटक दु:खी अशान्त अथवा व्याकुल हो जाता है तो आध्यातम ज्ञान रूपी प्रकाशमय पथ ही उसके जीवन का एक मात्र उपाय रह जाता है। भल मनुष्य बढ़ती हुई सुविधाओं को सुख समझ लेता है। इतनी सुविधाओं को बढ़ाने के बाद भी उसे जो वास्तविक सुख-शान्ति का अनुभव होना चाहिए वह नहीं हो पाता क्योंकि मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार कोई अल्प-कालीन साधन नहीं बल्कि वह आध्यात्मिक ज्ञान है जो कि स्वयं परमपिता परमात्मा ने दिया है। जिस ज्ञान द्वारा मनुष्य अपने अन्दर उत्पन्न हुई विकृतियाँ काम, क्रोध, मोह, देह अहंकार आदि को निकाल कर दिव्य गुण—अर्न्तमुखता, हर्षितमुखता, गम्भीरता आदि को धारण करके ही अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकता है।

क्योंकि देश में जितने भी महापुरुष, सन्त आदि हुए हैं तो उनकी प्रतिष्ठा अथवा श्रेष्ठता का आधार कोई धन-दौलत या भौतिक साधनों की सम्पन्नता नहीं रही है बल्कि उनकी महानता के पीछे उनका आत्म-बल, श्रेष्ठ गुणों की धारणा, सत्य, अहिंसा, पवित्रता (puritv) आदि ही रहे हैं। राजा

सिद्धार्थ जो एक राजा के पुत्र, राजकुमार थे लेकिन जो बाद में एक बहुत बड़े धर्म-स्थापक महात्मा बने और आज विश्व में शायद ही कोई मनुष्य आत्मा होगी जो कि उनके नाम से अनभिज्ञ अथवा अपरिचित होगी। तो वास्तव में देखा जाए तो कि उनकी प्रतिष्ठा कोई राजकोय वैभव सम्पन्नता के कारण नहीं बल्कि उन्हीं को जो बाद में आध्यात्मिकता में रुचि पैदा हुई और उसी साधना के फलस्वरूप उनको जो आत्म-ज्ञान की प्राप्ति मिली उसी से ही वह आत्मा विश्व भर में श्रेष्ठता अथवा प्रसिद्धि प्राप्त कर सकी। तो यह भौतिक साधनों की सम्पन्नता को मनुष्य ने आधार समझ कर जो मान-शान की इच्छा में लगा हुआ है यह मात्र उसका भ्रमहै। तो मानव जीवन की वास्तविक श्रेष्ठता का आधार कोई विनाशी अल्पकालीन भौतिक साधन नहीं हैं। यह तो सब नाशवान यहाँ का यहीं रह जाने वाला है, बल्कि उसके जीवन की श्रेष्ठता की नींव (Foundation) उसका श्रेष्ठ आचरण, चरित्र, शुद्ध व्यवहार, आध्यात्मिक ज्ञान ही है। इन्हीं गुणों को जीवन में धारण करने से ही मनुष्य श्रेष्ठ मानव अर्थात् देवता के समान पूज्यनीय बन सकता है।

**

अमृतसर में ब्र० कु० आदर्श बहन भ्राता गुलबहार सिंह कमिश्नर कारपोरेशन को संग्रहालय में चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित महवा शहर में विश्व शान्ति आध्यात्मिक सम्मेलन में अपना वक्तव्य दे रही हैं ब्र० कु० गीता। साथ में ब्र० कु० प्रताप, भ्राता भद्रसिंह जी, ब्र० कु० सरला, डॉ० एम० एन० व ब्र० कु० विद्या बहन

डूबते का सहारा कौन ?

ब्र० कु० शीला काठमाण्डो (नेपाल)

वो भी एक समय था जब उनकी जीवन रूपी नाव सागर में तैरती हुई अनेक यात्रिओं को किनारे लगाती थी ! सभी यात्री खुश होकर उसे धन्यवाद देते थे और नाविक प्रसन्न होकर यह कार्य निरन्तर करता रहता था। कुछ समय पाकर जीवन ने मोड़ खाया। तैरती हुई नाव को तूफानों के झोंके आने लगे और चप्पू ढीले पड़ते गये ! नाव को सम्भालना मुश्किल हो गया। अब उनकी नाव अकेले ही तूफ़ानों से लड़ती रही ! देखने वाले देखते ही रहे ! किसी को भी साहस नहीं हुआ जो अपनी जान की बाज़ी लगाकर तूफानों से घिरे हुए प्राणी को बचा सके ! नाविक ने चारों ओर देखा, उसे कोई भी सहारा नज़र नहीं आया। परन्तु एक गुप्त सहारा तो था ही जिसके बल भरोसे उसने अपनी जीवन रूपी नाव को सागर में उतारा था ! स्वार्थी लोग उसकी डूब रही नाव को देखकर हँसते रहते, उनके पास वो शक्ति नहीं जो उसे बचा ले ! मगर यह सबको मालूम है कि ऐसे दुःख भरे दिन जीवन में किसी के पास भी आ सकते हैं।

बेरहम इन्सान को किसी के जीवन की चिन्ता नहीं। हाय ! कैसा यह संसार है और कैसा मानव का पत्थर दिल है जो डूबतों को सहारा नहीं देता ! बल्कि डुबते को देखता ही रहता है ऐसे समय पर जब कोई रक्षक नज़र नहीं आता तब किसी बलवान और साहस वाले नाविक की आवश्यकता रहती है जो दूसरों के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करके उसे बचा ले ! मगर ऐसा कोटों में कोई ही होगा जो स्वयं भी पार हो और अपने बल द्वारा दूसरों को भी पार कर सके। डूबतों का सहारा, निर्बल को बल देने वाला, संकटमोचन तो एक भगवान ही है। भला वह कैसे किसी के जीवन रूपी नाव को डूबने देगा ! बस उसी शक्तिवान के बल भरोसे, उसकी असीम शक्ति से नाव को उस किनारे पर जा खड़ा किया जहाँ से वह अब सहज ही अपनी मंजिल पर पहुँच सकता है।

यह जीवन भी एक यात्रा है और लक्ष्य इसकी मंजिल है। विघ्नों और समस्याओं की आँधियाँ जब मनुष्य को चारों ओर से घेर लेती हैं तब मानव अपने आप को इस संसार में अकेला अनुभव करता है। उसे अपना कोई भी नजर नहीं आता। जीवन में उदास और निराश हो जाता है तब एक सच्चे साथी व सहारे की तलाश करता है। चारों ओर बड़ी प्यासी नजर से देखता है और जहाँ उसे स्नेह मिलता है वह वहाँ ही भाग जाता है।

इस पापमय जगत में चारों ओर तूफ़ान ही तूफ़ान हैं, मगर जिसको स्वयं ईश्वर का सहारा मिल गया उसे इन तूफ़ानों को तोफ़ा समझकर पार करना है। कई बार लगातार एक के बाद दूसरा जब विघ्न आता ही रहता है तो उसका सामना करने की शक्ति इतनी नहीं होने के कारण वह आत्मायें हार खाकर निराश हो जाती हैं, और अपने को हिम्मतहीन समझकर अस्त्र-शस्त्र सब छोड़कर बैठ जातीं है। "मगर नहीं" हिम्मत हारने की आवश्यकता नहीं। तुम डरते क्यों हो ? हार और जीत तो इस (Drama) का खेल है ! भगवान ने तुम्हारी आशाओं के दीपक तो पहले से ही जला दिये हैं ! हिम्मत नहीं छोड़नीं, नइया का खेवईया सर्वशक्तिवान बाप तुम्हारे साथ है तो अन्तिम

विजय तुम्हारी है। तुम तूफ़ानों का स्वागत करो। यही तुम्हारे भाग्य का सितारा चमकाने वाले हैं। तूफ़ान सदा रहने वाले नहीं हैं आज आये हैं, कल चले जायेंगे। इसी से ही तुम्हें जीवन में भरपूर शक्ति और आनन्द की अनुभूति होगी। जब भी तुम कभी तूफ़ानों के घेरे में आ जाओ तो अपनी शक्तियों को मत भूलो। ईश्वरीय शक्ति के बल पर यह सब तूफ़ान हवा में उड़ जाएँगे! मगर तुम यह तो सोचो कि तुम्हारी नाव का चप्पू कौन चला रहा है? तुम्हें घबराने की ज़रूरत नहीं! तुम धीरज से काम लो।

कहावत भी है: —जिसका साथी है भगवान उसको क्या रोकेगा आँधी और तूफ़ान!

देखो! सबसे प्यारी वस्तु अपना जीवन जिस को तुमने बिना कुछ सोचे समझे ही बलिदान कर दिया तो क्या उस जीवन को महान बनाने के लिए तुम कुछ कमज़ोरियों का बलिदान नहीं कर सकते! तुम्हारी आत्मा चन्द्रमा की तरह इस अंधारमय संसार में चमकेगी और अपनी रोशनी के द्वारा तुम अनेक आत्माओं को रोशनी दे सकोगे। कमज़ोर आत्माओं को बलवान बनाना ही श्रेष्ठ आत्माओं का परम कर्त्तव्य है। महान आत्माएँ वहीं हैं जो अपना सब कुछ देकर भी दूसरों की रक्षा करें! उनका ही गायन, विश्व उनको ही पूजता है। इसलिए सबकी नाव को पार लगाना सीखो, गिरते को उठाओ, बेसहारों को सहारा दो, किसी का बिगड़ा काम बनाओ, किसी के दर्द की दवा बन जाओ, क्योंकि यह जीवन मनुष्य का एक दीपक है न जाने कब हवा के झोंके से बुझ जाए!

□

१६ सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत मेहसाना के निकट सल्लासणा में राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता अमृत भा. जोशी जी द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ में ब्र० कु० सरला तथा अन्य भाई बहनें खड़े हैं

शोलापुर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित इन्दापुर में राजयोग शिविर में लगभग १५० अध्यापकों ने भाग लिया। मंच पर (बाएं से) ब्र०कु० निर्मला, सोमप्रभा, महानंदा, तथा शिक्षा अधिकारी कुलकर्णी जी →

"विश्व के भविष्य-वक्ताओं की नज़र में भारत"

ब्र० कु० अमित गुप्ता, बल्लारपुर

गेरार्ड क्राइसे का विश्व की चोटी के भविष्य-वक्ताओं में स्थान है। क्राइसे की भविष्य-वाणियाँ कदाचित् ही असत्य रही हों। एक बार एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ ने क्राइसे से पूछा—आप मानते हैं कि अतीन्द्रिय शक्तियों एवं सिद्धियों का उपयोग विश्व कल्याण के लिए है, तो आप इतना तो बता ही सकते है, संसार में भीषण रूप से पनप रही भौतिक कृतियों में भी क्या कभी परिवर्तन आयेगा ? क्या ये राजनीतिक चालें बन्द होंगी ? क्या निःशस्त्रीकरण भी सम्भव है ? क्या समग्र विश्व कभी एक सूत्र में आबद्ध हो सकता है ? उक्त प्रश्नों का उत्तर क्राइसे ने तत्काल इस प्रकार से दिया, "मैं देख रहा हूँ कि पूर्व के एक अति प्राचीन देश (भारत) जहाँ साधू और सर्पों की पूजा होती है, वहाँ के लोग मांस भक्षण नहीं करते, वे ईश्वर-भक्त और श्रद्धालू होते हैं, उनकी स्त्रियाँ पतिव्रता और कभी भी अपने पतियों को तलाक देने वाली नहीं होती, वहाँ के लोग सच्चे और ईमादारन होते हैं—से एक प्रकाश उठता आ रहा है, वहाँ किसी ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ है, जो सारे विश्व के लिये कल्याण की योजनाएँ बनायेगा, इस बीच संसार में भारी उथल-पुथल होगी, भयंकर युद्ध होंगे, जिसमें कुछ देशों का तो अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा, उस व्यक्ति के पीछे सैंकड़ों लोग, जिनमें स्त्रियाँ अधिक संख्या में होंगी, चल रहें होंगे। सब जगह अमन चैन होगा।"

अन्य भविष्यवक्ताओं की तरह से ही प्रो० कीरो की भविष्य वाणियों का अपना महत्व कुछ कम नहीं। प्रो० कीरो आज न केवल इंग्लैंड में सम्मानित हैं, बल्कि विश्व भर में उनके भविष्य-कथनों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इसका कारण यह है कि, उन्होंने जितनी भी भविष्य-वाणियाँ की हैं, वे सभी अविकल रूप से सत्य सिद्ध हुई हैं। प्रो० कीरो भारत के उज्ज्वल भविष्य पर भी अपनी महत्वपूर्ण टिप्पणी कर चुके हैं। इस सम्बन्ध में उनका कथन था कि विशुद्ध धर्मावलम्बी नीति के एक सशक्त व्यक्ति के भारत वर्ष में जन्म लेने का योग है। उसकी आध्यात्मिक शक्ति दुनिया भर की तमाम भौतिक शक्तियों से समर्थ होंगी। बृहस्पति का योग होने के कारण ज्ञान क्रांति की सम्भावना है। जिसका असर सारी दुनिया में पड़े बिना नहीं रहेगा। तृतीय विश्व युद्ध अवश्य होंगा। और उस युद्ध के बाद ही पश्चिमी सभ्यता का सदा-सदा के लिए अन्त हो जायेगा। भारत वर्ष एक बार फिर सारे विश्व को ज्ञान का प्रकाश देगा।

सुप्रसिद्ध विद्वान एवं ख्याति प्राप्त ज्योतिष आचार्य पं० गोपी नाथ चुलैट भारत के अतीन्द्रिय शक्ति सम्पन्न भविष्य दृष्टा थे, उनके अनुसार अब संधियुग चल रहा है, जिसमें अन्धकार समाप्त हो जावेगा तथा प्रकाश की किरणें मानव हृदय में उद्दिप्त होने लगेंगी। ईश्वर भक्ति सिर्फ़ माला जापने तक सीमित न रहकर समाज के पिछड़े वर्ग की सेवा के रूप में सामने आयेगी।

डॉ जूलवर्न एक विख्यात फ्रान्सिसी लेखक हैं, उनकी अधिकतर भविष्य-वाणियां-शत प्रतिशत सत्य साबित हो चुकी हैं। डॉ० वर्न का कहना है कि सन् २००० तक विश्व की आबादी ६४० करोड़ के लग-भग होंगी। एक ओर तो संघर्ष होते रहेंगे, दूसरो ओर धार्मिक क्रांति होगी। यह आध्यात्मिक क्राँति तो भारतवर्ष से ही उठेगी। सभी अनुयायी एक

समर्थ संस्था के रूप में प्रगट होंगे और देखते-देखते सारे विश्व में अपना प्रभाव जमा लेंगे। और असंभव दिखने वाले परिवर्तनों को वे आत्मशक्ति के माध्यम से सरलता, सफ़लतापूर्वक सफ़ल करेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के भारतीय भविष्य वक्ताओं में राधेश्याम रावल का प्रमुख स्थान है। उनकी महत्वपूर्ण भविय वाणियाँ इस प्रकार हैं—शिक्षा के स्वरूप के विषय में नये सिरे से विचार होगा। भारत कुछ ऐसी वैज्ञानिक खोज करेगा, जो विश्व को आश्चर्य में डाल देगा। यहाँ की सैन्य शक्ति बढ़ेंगी। नारी जाति का सम्मान होगा। एक बार फिर विश्व युद्ध की विभिषिका होगी। तब सभो देश भारत की ओर ही देखेंगे।

एण्डरसन की शायद ही कोई भविष्यवाणी असत्य होगी। यह अमरीका का महान ज्योतिषी है। विनाश के बारे में उनके विचार—अणुशस्त्रों की भयंकरता की ओर अभी किसी का ध्यान नहीं, पर अगले तीन वर्षों के भीतर ही चीन या रूस का कोई आन्विक परीक्षण सायबेरिया में होगा। इस परीक्षण से वहाँ की पृथ्वी फट जायेगी (स्मरण रहे साय-बेरिया विश्व का सबसे अधिक रेडियो विकिरण वाला क्षेत्र है) जो पृथ्वो अभी गोलाकार है उसके फट जाने से अन्तरिक्ष परिभ्रमण पथ पर उसकी स्थिति फटे हुए रबड़ के गेंद की तरह होगी। भारत-वर्ष में एक छोटे देहात में जन्मे व्यक्ति का धार्मिक प्रभाव न केवल भारतवर्ष में बल्कि दूसरे देशों में भी बढ़ने लगेगा। यह संसार के तमाम संविधान के समानान्तर एक मानवीय संविधान का निर्माण करेगा। सन् १९९९ तक सारे संसार का रूप ही बदल जायेगा।

अन्य विख्यात भविष्यवक्ताओं की तरह महात्मा रामचन्द्र ने भी विलक्षण भविष्य वाणियाँ की हैं उनका कथन है—संसार में जब भी कोई देव-दूत आया, अवतार हुआ, प्रकृति ने उसके निर्माण के पूव की अवस्था को ध्वंस करने का सहयोग अवश्य दिया है। परिवर्तन का समय आ गया है, जो अब टल नहीं सकता। ईश्वरीय सत्ता मानवीय रूप में अपनी परमप्रिय धरती पर जन्म ले चुकी है और अपना काम करने में लगी हुई है। गल्फस्ट्रीम की धारा अपने बहाव की दिशा बदल देगी। और इसी बीच भारतवर्ष अपनी आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नति करता हुआ शीर्षस्थान की ओर बढ़ता जायेगा। फिर एक लम्बे समय तक विश्व का नेतृत्व भारत के हाथों में आ जावेगा।

नौस्ट्राडम विश्व विख्यात सर्वाधिक पुराने अद्‌भुत भविष्यवक्ता माने जाते हैं। उनके अनुसार प्रकृति को इतना क्रुद्ध कभी नहीं देखा गया होगा, जितना वह २० वीं शताब्दी के अन्त में देखी जावेगी। संसार को बदलने वाली एक अद्‌भुत शक्ति सक्रिय होगी। जो अपनी भावनाओं की सौजन्यता द्वारा ही सारे संसार को एक सूत्र में बाँध देगी। उसके बाद दुनिया में इस तरह का अमन-चैन स्था-पित होगा जितना आज तक संसार में कभी भी देखा, पाया न होगा। उस युग पुरुष की वेशभूषा अत्यन्त साधारण होगी। मस्तक में चन्द्रमा और पाँव में पदम होगा, तथा वह दो बार ही स्थान परि-वर्तन करेगा।

विश्वविख्यात अमरीकी भविष्यवक्ता चार्ल्स क्लर्क विश्व के अद्‌भुत भविष्य वक्ताओं की प्रथम पंक्ति में आता है। एक बार चार्ल्स ने भारत को इंगित करते हुए कहा था एशिया के किसी देश में कुछ ही दिनों में एक प्रचंड विचार क्रांति उठने वाली है। जो सारे विश्व में इस तरह गूँज जायेगी कि मानव का सोया अंतःकरण जागने को विवश हो जायेगा।

आनन्दाचार्य के अनुसार तृतीय विश्व युद्ध में भारत की भूमिका ही निर्णायक सिद्ध होगी। धर्म इस देश में एक संघठित संस्था का रूप लेकर पनपेगा। वह विश्व कल्याण का एक नया नक्शा तैयार करेगा। इस संघठन का स्वामी संचालक कोई गृहस्थ व्यक्ति होगा। सब देश शांतिपूर्वक कैसे

रहेंगे उसकी एक व्यवस्थित आचार संहिता वह तैयार करेगा।

इंग्लैंड के प्रख्यात ज्योतिषविद् प्रो० शेरो ने कहा है कि तृतीय विश्व युद्ध के बाद सारे संसार में एक ही धर्म मानव धर्म के रूप में विराजमान होगा, जिसका उदय भारत से होगा।

शाह नियामत उल्ल बल्ली साहब प्रमुख रूप से बुखारा के सन्त के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुए। उनकी भविष्यवाणी काफ़ी पुरानी होने पर भी सत्य सिद्ध हो रही है। उन्होंने लिखा है तृतीय विश्व युद्ध बड़ा भयंकर होगा इसमें अंग्रेज पूरी तरह से समाप्त हो जायेंगे। और भारत का अभ्युदद्ध एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में हो जावेगा।

प्रो० हरार ने अपनी एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी यह भी की है कि सारे विश्व में १९७० से २००० ई० तक भारी राजनीतिक परिवर्तन होंगे। ब्रिटेन, श्रीलंका, फ्रान्स, रूस और भारत में अप्रत्याशित रूप से सरकारें बदलेंगी, ऐसे किसी दिव्य पुरुष का जन्म भारतवर्ष में हुआ है, जिसके द्वारा की नई आध्यात्मिक क्रांति सारे विश्व में छा जायेगी। यू० एन० ओ० टूटकर अमरीका से भारत में आ जायेगा। फिर भारत सारे संसार का चिरकाल तक नेतृत्व करता रहेगा।

अमरीका में जन्मी श्रीमति जीन डिक्सन का विश्व के अद्भुत भविष्य वक्ताओं में प्रमुख स्थान है। उनके अनुसार एशिया के किसी देश—संभवतः भारतवर्षमें एक महान आत्मा ने जन्म लिया है, जो एक महान आध्यात्मिक क्रांति की सूत्रपात्र, संचालन और नियंत्रण करेगा। उसके पीछे क्रियाशील आत्माओं की शक्ति होगी।

□

ईश्वरीय गीत

ब्र० कु० प्रभा, महू (म० प्र०)

शिव बाबा की सन्तान हैं हम,
शिव बाबा की सन्तान।
सदा चले हम सीना तान।
हमें रोक पाये ना कोई,
आंधी या तूफ़ान।
कुटिया कुटिया पहुंचायें हम,
बाबा का सन्देश महान्।
अपनी जान से प्यारी समझें,
हर आत्मा की जान (१)
शिव बाबा की सन्तान हैं हम,
शिव बाबा की सन्तान।
पर्वत बान्धे, नदियाँ चिरे
जंगल डाले छान।
हर मुश्किल से मुश्किल को,
हम समझें आसान (२)
शिव बाबा की सन्तान हैं हम,
शिव बाबा की सन्तान।
ईश्वरीय सेवा विश्व की सेवा,
अपना धर्म ईमान।
अपने धर्म पर मान है हमको,
अपना धर्म है महान (३)
शिव बाबा की सन्तान हैं हम
शिव बाबा की सन्तान।
सदा चले सीना तान,
हमें रोक पाये ना कोई,
आँधी या तूफ़ान।

आत्मा–एक अद्भुत मशीन

ब्र० कु० सुमन, फरुखाबाद

वाह रे सृष्टिकर्ता आपको भी क्या कमाल है ? दुनिया चाहे कितनी भी नकल क्यों न करे परन्तु आपकी पवित्रता (Purity), महानता (Superiority), विशेषता (Speciality)और(Royality) पर कभी भी नहीं पहुंच सकती। वैसे तो वैज्ञानिकों ने आपके स्थान तक पहुंचने के लिए क्या नहीं किया ? कृत्रिम मानव का निर्माण किया, चाँद पर पहुंच गये। उपग्रह बनाकर भूमण्डल में छोड़ दिये, इस प्रकार विज्ञान द्वारा ही इस पृथ्वी को स्वर्ग बनाने के लिए तरह-तरह की मशीनों आदि का निर्माण किया और अब भी निर्माण कार्य में प्रयत्नशील हैं।

वैज्ञानिकों ने आकर्षण के साधन, यातायात एवं मनोरंजन के साधन, कृत्रिम रचना के साधन, यहाँ तक कि हर प्रकार की सुख शान्ति प्राप्त करने के साधन जुटाकर स्वर्ग का अनुभव कराने का प्रयत्न किया है। वह अपने रचयिता परमापिता को भी भूल गया। ऐसे-ऐसे यन्त्र तैयार किये जिनके द्वारा विश्व के किसी कोने में बैठकर सारे विश्व का समाचार ले सकते हैं।, बातचीत कर सकते हैं, मनोरंजन कर सकते हैं, एवं दृश्य देख सकते हैं।

लेकिन क्या आपने कभी आत्म-बुद्धि के द्वारा यह विचार किया कि यह मशीनें कहाँ से निकली हैं ? क्या परमात्मा का स्थान यह मानव ग्रहण कर सकता है ? तो आज हम इन मशीनों की तुलना उस शक्ति एवं सत्ता से करेंगे जो जड़ नहीं है, स्वयं चैतन्य है, अव्यक्त है परन्तु सशक्त है, और वह है आत्मा !

हमारे मानस पटल पर जो वास्तविक दृश्य अंकित होते हैं क्या मनुष्य निर्मित कैमरा ऐसे चित्र अंकित कर सकता है ? कृत्रिम कैमरे की रील समाप्त हो जाती है लेकिन आत्मा का कैमरा निरंतर एवं वास्तविक दृश्य का परिचय कराने वाला है। जब हम कोई पिक्चर देखते हैं अथवा जो दृश्य की रील मशीन द्वारा देखते हैं उसमें दृश्य नम्बर वार दिखाई पड़ते हैं फिर दृश्य को बदलने में समय लगता है लेकिन आत्मा की मशीन के द्वारा जो हम दृश्य देखना चाहते हैं उस दृश्य की रील को चढ़ाते एक सैकण्ड नहीं लगता है।

बिलासपुर में भ्राता रमेश चन्द्र सक्सेना, डी० आर० एम० दक्षिणी पूर्वी रेलवे आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। उन की बायीं ओर ब० कु० गीता खड़ी हैं

स्थूल व सूक्ष्म शरीर

हरेक व्यक्ति के दो शरीर होते हैं (१) स्थूल शरीर (२) सूक्ष्म शरीर। जिस प्रकार स्थूल शरीर

को देखने, सुनने, स्पर्श करने के लिए स्थूल शरीर की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर को देखने सुनने और स्पर्श करने के लिए सूक्ष्म शरीर की आवश्यकता होती है। जिसका सूक्ष्म व्यक्तित्व जितना शक्तिशाली होता है वह उतना ही बारीकी से सूक्ष्म आकृतियों को पकड़ सकता है। जैसे रडार में भी दूर का दृश्य अंकित हो जाता है, वैसे ही हम भी एक स्थान पर बैठे-बैठे दूसरे स्थानों का सीन देख सकते हैं। उदाहरण के तौर पर—कभी-कभी ऐसा होता है जो भविष्य में घटना घटने वाली होती है तो वह पूर्व सूचना के रूप में स्वप्न में आ जाती है। कभी कोई प्रिय मरता है तो स्वप्न में उसका समाचार मिल जाता है। कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप में दृश्यमान जगत में दृष्टव्य हो जाता है या तो साक्षात्कार के रूप में या किसी दृश्य के रूप में।

इसी प्रकार कम्प्यूटर मशीन जिसके द्वारा चीज की जाँच की जाती है, जिससे गणित कार्य या लिखित कार्य किया जाता है। आत्मा भी एक कम्प्यूटर है, उसके द्वारा अपने सारे गुणों की कर्मों की जाँच की जा सकती है। इसके अलावा हर टेपरिकार्डर को देखें उसमें ध्वनि टेप की जाती है, जब चाहें उसे पुनः सुन सकते हैं। परन्तु आत्मा वह टेप रिकार्डर है जिसमें भरी आवाजें किसी समय भी सुनी जा सकती हैं।

मानव द्वारा यह सब मशीनें आत्मा की अनुभूति द्वारा बनाई गई हैं। कृत्रिम मशीनें हद की हैं परन्तु आत्मा की मशीन बेहद की है। विज्ञान ने हर कार्य के लिए अलग मशीन बनाई होती है लेकिन आत्मा की मशीन में सभी मशीनों का रहस्य दिया हुआ है। अभी तक तो हम अपने शारीरिक भोग-विलास, सुख-शान्ति को पाने के लिए कृत्रिम चीजों का उपयोग करते आये लेकिन इन कृत्रिम चीजों के उपयोग से हम वास्तविक सुख-शान्ति नहीं प्राप्त कर सके और अज्ञान एवं दुःख के सागर में ही विकसित होते चले गये।

तो सबसे पहले हम अपने आत्मा के स्वरूप को पहचानें। आत्मा की मशीन में युगों से पड़े-पड़े बुराइयों एवं पाप कर्मों की जंक लग गई है। सर्वप्रथम उसे साफ करना होगा। आत्मा की मशीन के वास्तविक पुर्जे हैं—मन,-बुद्धि और संस्कार। जब इन मन,-बुद्धि और संस्कारों में तमोगुणी विकारों (काम,-क्रोध,-लोभ, अहंकार) की जंक लग जाती है तो आत्मा अपने स्वधर्म से गिर जाती है। आत्मा का शुद्ध स्वरूप है पवित्रता, शान्ति, सुख, आनन्द। परन्तु तमोगुण आजाने से आत्मा का शुद्ध स्वरूप बदल या विकृत हो जाता है, जैसे स्नेह से बदल—काम विकार में, शान्ति से बदल क्रोध में, लोभ, मोह, अहंकार में परिवर्तित हो जाता है।

अभी तक जो हमारी आत्मा ने गुणों को छोड़ अवगुणों को धारण किया है जिसके कारण मानव स्वर्ग के बजाय नर्क में जा गिरा है। वो अब हमें अपने सम्पूर्ण मनसा,वाचा, कर्मणा विकारों को त्याग कर सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, संपूर्ण पवित्र मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है। जो हमारी आत्मा रूपी बैटरी पूर्ण रूप से डिसचार्ज हो गयी थी उस बैटरी को फिर से साधनयुक्त बनाने के लिए परमपिता परमात्मा रूपी जैनेरेटर से फिर से चार्ज करें। जब हमारा परमपिता परमात्मा से सही कनेक्शन हो जावेगा तो स्वतः ही आत्मा अपनी खोई हुई शक्ति को प्राप्त कर साधनयुक्त बन जावेगी। अभी हम अपनी आत्मा की मशीन से अनभिज्ञ हैं तो इसके लिए परमपिता शिव से इसकी जानकारी व चलाने की शक्ति भी ले लेनी है।

अतः स्पष्ट है कि हम एकाग्रचित्त होकर अपने योगबल को बढ़ायेंगे तभी हम संकल्प शक्ति द्वारा एक जगह बैठे-बैठे ही दूसरी आत्माओं से बातें कर सकेंगे और उनकी कही हुई बातों को सुन सकेंगे, दूसरे स्थानों के दृश्य देख सकेंगे।

जैसा कि हम बचपन में कहानियों में सुनते आये हैं कि बाबा जी की सत्य खड़ाऊँ द्वारा लोग बहुत जल्द ही उड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर

पहुंच जाते थे; वह कहानियाँ झूठी नहीं हैं। जब हम आत्मा को सत्य की खड़ाऊँ पर बिठायें तभी हमारे जीवन की सभी क्रियायें पूर्ण रूप से सफल हो सकती हैं।

यह सब रहस्ययुक्त कार्यों को करने के लिए रहस्ययुक्त पिता परमेश्वर से ज्ञान लेने की आवश्यकता है।

उस प्यारे परमपिता से पूर्ण रूप से अपनी आत्मा को तब ही लाभान्वित कर सकेंगे जब (१) समय को घड़ी को पहचानेंगे। (२) समय के प्रमाण अर्थात् कलियुग के अन्त में आये हुए प्यारे पिता को परिचय सहित पहचानेंगे। (३) साथ ही स्वयं आत्मा-स्वरूप को पहचान अपने ८४ जन्मों की कहानी जानेंगे। (४) समय की पहचान के साथ-भविष्य में आने वाली सतयुगी सृष्टि में भी श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करने के लिए सहज राजयोग की ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ेंगे।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय इन सभी जानकारी के लिए अपनी सर्व प्रकार की सेवायें प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर है।

□

रायचूर सैन्टर पर वहां के मुनसिफ मैजिस्ट्रेट तथा जज तथा आयुक्त के पधारने पर ब्र०कु० भाई बहन उनके साथ खड़े हैं

इन्दापुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ० एम० एम० हेगड़े (बाएं से) ब्र० कु० सोमप्रभा, महानन्दा दिखाई दे रही हैं

विदेश सेवा-समाचार

लंडन में सिलविया माइन्ड कन्ट्रोल नामक संस्था के कुछ कार्यकर्त्ता लंडन सेवा केन्द्र पर पधारे। उन्होंने विद्यालय की गतिविधियों को देखा और अपनी वार्तालाप के दौरान कुछ प्रश्नोत्तर भी किए कि (i) आप इतने बड़े विश्व को परिवर्तन करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर किस आधार से ले सकती हो ? (ii) मन पर कर्मों का प्रभाव कैसे पड़ता है आदि-आदि ? प्रश्नों के उत्तर पाकर वे बहुत ही सन्तुष्ट हुए।

हालैंड में वहाँ के एक सुप्रसिद्ध म्यूजियम हाल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त इसी हाल में महिलाओं के लिए आयोजित कान्फ्रेंस में भी ब्र० कु० बहनों ने भाग लिया। इस कान्फ्रेंस का विषय था—"यूरोप की महिलाएँ और शान्ति।" इस अवसर पर विभिन्न महिला संस्थाओं की ३०० महिलाओं ने भाग लिया। सेवा केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर भी १२ दिसम्बर शाम को एक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका विषय था "शन्ति की राह पर"। जिसको वहाँ के लोगों ने बहुत रुचिपूर्वक देखा।

मैक्सिको से समाचार मिला है कि दादी जानकी जी और जयन्ती बहिन के मैक्सिको पहुंचने पर वहाँ के राष्ट्रपति की पत्नी उनसे व्यक्तिगत मिलीं और योगाभ्यास किया, जिसमें उन्होंने बहुत अच्छा अनुभव किया। कोरनावाका यूनिवर्सीटी के १३० विद्यार्थियों और अध्यापकों के सन्मुख "मानसिक शक्ति" विषय पर प्रवचन हुआ। इसके अतिरिक्त आई० एस० एस० टी० आई अस्पताल के डाक्टरों के सन्मुख "मन की वृत्तियों को कैसे रोका जाए" विषय पर तथा ३०० बच्चों के सन्मुख "नशीली दवाइयों से खतरा और उसके बचाव" विषय पर प्रवचन हुए। कोरनावाका रेडियो स्टेशन से दादी जानकी जी और ब्र० कु० जयन्ती जी का इंटरव्यू प्रसारित हुआ।

ब्राजील में ब्रह्माकुमारी जानकी जी तथा ब्र० कु० जयन्ती जी के पधारने पर तीन दिन तक वहाँ के मुख्य टेलीविजन केन्द्रों तथा समाचार पत्रों ने इन्टरव्यू प्रसारित किए। तीसरे दिन की शाम को एक भव्य सुन्दर रंगमंच पर श्रव्य दृश्य का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका नाम है "दी डांस आफ यूनिवर्स।" शहर से निमंत्रित ३५० व्यक्तियों ने लाभ उठाया।

स्टाकहोम से प्राप्त समाचार के अनुसार वहाँ के भाई-बहिनों के आमंत्रण पर युनिवर्सिटी टाउन इंटरनेशनल यूथ सेंटर में राजयोग पर वर्कशाप का आयोजन किया गया जिसमें वहाँ के आध्यात्मिक रूचि लेने वाली ४० आत्माओं ने भाग लिया। वहाँ के मुख्य समाचार-पत्रों ने राजयोग का संदेश जन-जन तक पहुँचाने में पूरा सहयोग दिया। राजयोग का अनुभव कमेन्ट्री तथा स्लाइड द्वारा कराया गया।

सिडनी में दादी जानकी के पहुँचने पर ए० बी० सी० रेडियो इन्टरव्यू हुआ जिसमें उन्होंने पूछा कि आपके यहाँ आने का क्या उद्देश्य है ? उत्तर में दादी जानकी जी ने बताया कि राजयोग के द्वारा जो मुझे प्राप्त हुआ है वह अन्य आत्मएँ भी सीख कर प्राप्त करें। क्योंकि वर्तमान समय सभी मनुष्यात्माएँ शान्ति की तलाश में हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने मन की स्थिरता के कारण भी पूछे।

न्यूजीलैंड—दादी जानकी जी के न्यूजीलैंडपहुँचने पर वहाँ के हार्टीकलचरल लायर्स हट में एक सार्व-

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

आध्यात्मिक सेवा-समाचार

काठमांडू—भक्तपुर शहर में हनुमान घाट पर विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे हजारों भक्तों ने प्यारे बाप का सन्देश प्राप्त किया। इसके साथ-साथ विद्वान लोगों की ब्रह्म-सभा के बीच भी आध्यात्मिक प्रवचन किया गया, जिसे लगभग ६०० व्यक्तियों ने सुना। भारत के राष्ट्रपति भ्राता नीलम संजीवा रेड्डी जी के नेपाल में पहुँचने पर वहाँ के भारतीय एम्बेसडर ने ब्रह्माकुमारी बहनों को भी राष्ट्रपति जी से मिलने का निमंत्रण दिया। ब्रह्माकुमारी बहनों ने राष्ट्रपति जी से मिलते समय ल० ना० का चित्र और पत्राचार पाठ्यक्रम की फाइल भेंट की। उसके पश्चात् नेपाल के प्रधानमंत्री, प्रधान न्यायाधीश, अंचलाधीश और राष्ट्रीय पंचायत के अध्यक्ष से भी ब्रह्माकुमारी बहिनों की मुलाकात हुई और उन्हें ईश्वरीय संदेश दिया गया।

अंजार सेवा केन्द्र से उमा बहिन लिखती हैं कि दिसम्बर मास में म्यूजियम का उद्घाटन समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। और भुज सेन्ट्रल जेल में, भचाऊ वीशा ओशवाल जैन बोर्डिंग में, नलिया अचलगच्छ, जैन देरासर में तथा खंभरा, नागलपुर, वरसामेड़ी गाँवों में प्रवचनों तथा प्रोजैक्टर शो के कार्यक्रम चले, जिनसे हज़ारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

हुबली सेवा केन्द्र से निर्मल बहिन लिखती हैं कि गत मास में कर्नाटक मेडिकल कालेज के नर्सिंग स्कूल में महिला विद्यापीठ में 'पिताश्री अन्तर हाईस्कूल भाषण स्पर्धा, लिखित स्पर्धा' तथा राजयोग और प्रोजैक्टर शो के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें अनेक विद्यार्थियों ने बड़े उमंग से भाग लिया।

जगाधरी सेवा केन्द्र से कृष्णा बहिन लिखती हैं कि पास के गाँव में भगवानगढ़ के गवर्नमेंट स्कूल में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अतिरिक्त नववर्ष पर विभिन्न वर्गों के वी० आई० पी० की उनके निवास स्थान पर सेवा की गई।

गोरखपुर सेवा केन्द्र से कमला बहिन लिखती हैं कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद स्वर्ण जयन्ती समारोह के उपलक्ष्य में मेवाड़ के महाराणा भगवत सिंह जी के शुभ आगमन के अवसर पर सेवा केन्द्र के निकट मोहदीपुर चौराहे पर ब्रह्माकुमारी बहिन-भाइयों द्वारा उनका स्वागत किया गया। बैज पहनाकर ईश्वरीय साहित्य भी भेंट किया गया। उन्होंने बैज बड़े स्नेह से यह कहकर लगवाया "बिटिया इसे यहाँ लगाओ।" इसके अतिरिक्त पड़रौना नगर में भी प्रवचन, प्रदर्शनी तथा प्रोजैक्टर शो के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए जो बहुत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

शाहजहाँपुर सेवा केन्द्र की ओर से नगर की आर्डिनेन्स क्लाथिंग फैक्ट्री के मन्दिर में १० दिन के लिए प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन फ़ैक्ट्री के जी० एम० ने किया। इस प्रदर्शनी में कई हजार आत्माओं ने लाभ उठाया।

उज्जैन सेवा केन्द्र से ब्र० कु० रुक्मणी लिखती हैं कि १६ सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन शहरों नरसिंहगढ़, ब्यावरा तथा राजगढ़ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग फिल्म का प्रदर्शन किया गया। काफी संख्या में आत्मायें इस ज्ञान योग से लाभ उठा रही हैं तथा वहाँ के निवासियों के निमन्त्रण पर सेवा केन्द्र खुल चुके हैं।

बड़ौदा सेवा केन्द्र से ब्र० कु० राज तथा ब्र०कु० निरंजना लिखती हैं कि गत मास में दीपक चैम्बर, सूरज का हॉल तथा डमोह गांव की रेलवे कालोनी में प्रदर्शनी के कार्यक्रम रखे गए। आनन्दपुरा, कल्याण नगर, कारेली बाग तथा प्रताप हाई स्कूल में राजजो कि बहुत सफल रही।

निशात गंज (लखनऊ) से ब्र० कु० सुमित्रा लिखती हैं कि जनवरी मास में रविदास के मंदिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

कासगंज में महिला जागृति उत्सव में ब्र० कु० आत्म इन्द्रा जी, कुमारी सोमिया को पुरस्कार देते हुए

राजगढ़ में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता बी० डी० सक्सेना जी। ब्र० कु० सरोज, डॉ० सरोज और अन्य भाई-बहन साथ में हैं

ब्यावर में रणजी क्रिकेट मैच के अवसर पर आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी को देखने के पश्चात् राजस्थान और मध्यप्रदेश के खिलाड़ी ब्र० कु० राधा और अन्य ब्र० कु० बहनों के साथ दिखाई दे रहे हैं

विजयवाड़ा सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित सेलूरू में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता नेरेल्ला राजागारू जी। ब्र० कु० सविता, ब्र० कु० अरूण, शकुन्तला साथ में खड़ी हैं

रायपुर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए रायपुर के महापौर भ्राता एस० आर० मूर्ति जी। ब्र० कु० विमला, कमला तथा अन्य बोधा की याद में खड़े हैं ←

योग शिविरों का आयोजन किया गया। जिनसे अनेक आत्माओं को शिवपिता का संदेश मिला।

कटक सेवा केन्द्र से कमलेश बहिन लिखती हैं कि ५० मील दूर जटणी में १५ दिन तक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। रेलवे इंस्टीट्यूट में भी प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम किया गया। हजारों आत्माओं को परमपिता का सन्देश मिल चुका है।

पणजी (गोआ) सेवा केन्द्र से ब्र० कु० शोभा लिखती हैं कि दिसम्बर मास में खोटल, कसाक और बिडवाडी गाँवों में तथा कुसाक के स्कूल में प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो के कार्यक्रम रखे गए। इसके अतिरिक्त मोरपिल्ला गांव में भी साप्ताहिक कोर्स दिया गया। जिससे २५-३० आत्माओं ने लाभ लिया।

महू सेवा केन्द्र से ब्र० कु० प्रभा लिखती हैं कि सेवा केन्द्र के हाल में डाक्टर्स, वैद्य एवं मैडिकल छात्रों की सेवा के लिए "राजयोग एवं चिकित्सा" सम्मेलन का आयोजन किया गया। धारा १४४ लागू होने के बावजूद भी बहुत आत्माओं ने शामिल होकर लाभ उठाया। इस कार्यक्रम का समाचार दैनिक पत्रों में छपा।

अमृतसर सेवा केन्द्र की ओर से तरनतारन, हुसैनपुरा तथा पुतलीघर में प्रदर्शनी के कार्यक्रम रखे गए, जिनसे सभी वर्गों के वी० आई० पीज़ तथा मिलट्री वालों ने लाभ उठाया। १७-१८ जनवरी को विश्व शान्ति दिवस पर योग के तीन सत्र रखे गए जिसमें गुलबहार सिंह आयुक्त नगर निगम पधारे। योग की वीधि और सिद्धि पर रोशनी डाली गई।

सोलापुर सेवा केन्द्र से ब्र० कु० शोभप्रभा लिखती हैं कि कुर्डुवाडी, दारफल, इंदापुर स्थानों पर प्रदर्शनी तथा योग शिविरों के आयोजन किए गए। इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्कूल, हाई स्कूल और कला-वाणिज्य महाविद्यालय में भी आनन्द फिल्म व प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए। जिनसे कई हजार आत्माओं ने लाभ उठाया।

मेहसना केन्द्र से ब्र० कु० सरला लिखती हैं कि कुकरवाड़ा उपसेवा केन्द्र के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य लोगों का स्नेह मिलन रखा गया। इसके अतिरिक्त धरोई इरीगेशन प्रोजैक्ट कालोनी में तथा उसखल, जेतलवासपण, बिलोद्रा, बोरीआवी, सतलासणा, धमेड़ा और सौलैया में प्रदर्शनी, झाँकी, प्रवचन और राजयोग के शिविरों के कई कार्यक्रम रखे गए जिनसे हजारों आत्माओं ने ईश्वरीय सन्देश प्राप्त किया।

मणिनगर सेवा केन्द्र की ओर से शेधरा, अडालज, काउनगर तथा नगर के विभिन्न स्थानों पर प्रवचन, प्रोजैक्टर शो, नाटक, प्रदर्शनी के बहुत रोचक और सफल कार्यक्रम रखे गए जिनसे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त कलोल के खोडियार माँ के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव पर कल्याणपुरा में प्रवचन कार्यक्रम से ७०० आत्माओं ने लाभ उठाया।

मिर्जापुर सेवा केन्द्र की ओर से पिपरी गीता पाठशाला के भाई-बहिनों के सहयोग से कर्मचारी क्लब में ५ दिन के लिए राजयोग प्रदर्शनी तथा योग-शिविर का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा तथा पर्चों द्वारा सब जगह प्रदर्शनी का प्रचार किया गया। प्रदर्शनी से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया जिनमें अधिकारी वर्ग भी शामिल हैं। योग शिविर से भी कई आत्माएँ लाभान्वित हुईं।

नयागंज (कानपुर) सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुमित्रा लिखती हैं कि पटकापुर मुहल्ले के ल० ना० के मंदिर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। तपेश्वरी देवी का मंदिर समीप होने के कारण आने वाले दार्शनार्थियों की काफी भीड़ रही। इसके अतिरिक्त कलैक्टरगंज, दाल मंडी में "मानव के सतयुग से संगम तक जन्मों की अद्भुत प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया, जिससे व्यापारी वर्ग तथा अन्य लोगों ने हजारों की संख्या में लाभ उठाया। मंसूर नगर गीता पाठशाला की ओर से भी एक चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई

जिस से अधिकतर साधु-संतों तथा अन्य अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

रायपुर (म० प्र०) सेवा केन्द्र से कमला बहिन लिखती हैं कि टीटीलागढ़ में महावीर धर्मशाला में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी तीन दिन तक रही जिससे करीब ५००० आत्माओं ने लाभ उठाया। सप्ताह कोर्स के बाद कई आत्माएँ प्रतिदिन क्लास कर रहे हैं। गत मास में सरस्वती कन्या हायर सेकेन्डरी पाठशाला में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाट नगर-निगम के मेयर भ्राता एस० आर० मूर्ति ने किया। इस प्रदर्शनी से ५००० आत्माओं ने तथा राजयोग शिविर से २०० आत्माओं ने लाभ उठाया। अब यहाँ पर गीता पाठशाला खोली गई है।

धर्मशाला सेवा केन्द्र की ओर से देहरा गोपीपुर में तहसील मुख्यालय के सामने दिसम्बर मास में दस दिवसीय प्रदर्शनी, योगशिविर तथा ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहाँ के विद्युत विभाग के एक्सेन ने किया। इस प्रदर्शनी से लगभग ३००० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

अंकोला सेवा केन्द्र का वार्षिक उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया, जिसमें मुख्य अतिथि वहाँ के तहसीलदार भ्राता व्यास देशपाण्डे थे। इसके अतिरिक्त नव वर्ष के अवसर पर भी 'कुमार दिनाचरण' मनाया गया।

बुरहानपुर सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुधा लिखती हैं कि चिखली में विश्व हिन्दू परिषद की तरफ से हिन्दू सम्मेलन में दो दिन के लिए चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसको २०००० आत्माओं ने देखा। साथ साथ महिला सम्मेलन में भी प्रवचन का अवसर मिला। सभी के आग्रह पर चिखली में दुबारा टाउन हाल में प्रदर्शनी लगाई गई तथा दो मास के लिए कलास का भी प्रबन्ध किया गया है।

रांची सेवा केन्द्र से ब्र० कु० निर्मला लिखती हैं कि रांची संग्रहालय द्वारा धुर्वा एच० ई० सी० के० वीर कुँवर सिंह के विशाल सामुदायिक हाल में त्रिदिवसीय विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसका उद्घाटन एच० ई० सी० के सीनियर मैनेजर इन्चार्ज भ्राता आर० सी० प्रसाद जी ने किया। इस कार्यक्रम के द्वारा सभी वर्ग के अधिकारीगण एवं गणमान्य ५००० व्यक्तियों ने सपरिवार आकर लाभ उठाया। चार दिवसीय सहज ज्ञानयोग शिविर से भी २०० आत्माओं ने लाभ लिया जिसमें से ४० विद्यार्थी नियमित कलास कर रहे हैं।

भीलवाड़ा सेवा केन्द्र की ओर से गतमास में ७ दिन के लिए नगर के प्रतिष्ठित हाल ज्ञान भवन में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भ्राता जी० एस० चयलोत ने किया। इस प्रदर्शनी से १०० डाक्टर्स तथा ट्रेनिंग पर आई हुई ५० नर्सों एवं ५००० अन्य आत्माओं ने भी लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त २५ दिसम्बर को भीलवाड़ा जिला चिकित्सा आफिस में डाक्टर्स, आफिसर्ज की फैमिली प्लैनिंग की मिटिंग में भी ब्र० कु० बहनों को प्रवचन का अवसर मिला, जिसमें बताया गया कि राजयोग की शिक्षा लेकर फैमिली प्लैनिंग का कार्य सहज हो जाता है।

बारंगल सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि "रोलूरू" में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि विजयवाड़ा जेल के सुपरींटेंडेंट भ्राता विनय भूषण राव थे। इसके साथ-साथ ४ योग शिविरों का आयोजन किया गया। दस दिन में प्रदर्शनी से १८००० आत्माओं ने तथा राजयोग शिविरों से १२० आत्माएँ हर रोज कलास कर रही हैं।

कुरुक्षेत्र में १६ जनवरी को विश्व शान्ति दिवस मनाया गया जिसमें जिला के अधिकारीगण बुद्धिजीवी लोगों ने भाग लिया।

□

कोटा में ब्र० कु० ऊषा औद्योगिक शान्ति प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या श्रीराम रेयन्स के महा-प्रबन्धक भ्राता पी० पी० अपांचु को दे रही हैं

राजगढ़ ज़िला में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी में भ्राता शिव नन्दन दुबे जी को उद्घाटन के पश्चात ब्र० कु० अवधेश चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

(पृष्ठ ४५ का शेष)

जनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें दादी जी ने अपने अनुभव के आधार पर स्वस्थ मन और श्रेष्ठ जीवन के आधार पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि सदा अपने मन को सर्वशक्तिवान शिव परमात्मा की याद में लगाए रखो जिसके द्वारा शक्ति प्राप्त कर अपने मन को शक्तिशाली बना सकते हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा २०० भाई-बहिनों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त दादी जानकी जी मेयर आफ पिटौनी से व्यक्तिगत मिलीं और उन्हें योगाभ्यास कराया। योगाभ्यास के पश्चात् मेयर ने अपने विचारों में बताया कि आज मैंने जो शान्ति का अनुभव प्राप्त किया है, ऐसा अनुभव जीवन में कभी भी प्राप्त नहीं किया है। मैं इस विद्यालय से सम्पर्क रखूँगा। समय प्रति समय इसके द्वारा लाभ लेता रहूँगा।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश प्रकाशक, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली ने चोपड़ा प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D N) 178